बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम सल्लल्लाहो अ़लैका या वलीयल अ़स्र (अ़ज.) अदरिकना

गुज़श्ता अक़वाम में तज़केरए इमाम महदी अलैहिस्सलाम

इस्तेग़ासा : क्या करें हवस परस्तों की तुग़यानी बढ़ती जा रही है। हर निहाले चमन के लिए तबर तेज़ किये जा रहे हैं हर ताएरे नग़्मा ज़न के लिए नई नई शक्लों में क़फ़स बनाए जा रहे हैं। अक़वामे आ़लम की पेश रफ़्ती ने गोश्त पोस्त के इंसान को बला खेज़ हवाए नफ़्सी के बाल-ओ-पर दे दिये हैं। तहज़ीब बरहना हो कर रक़्स कर रही है। हर शै का मिज़ाज उलट रहा है। महफ़िलों में वोह सिन्फ़ जिसे मस्तूर कहा जाता है उ़रयां हो रही है। इस इंसानी बरादरी में उभरते जवान एक दूसरे से मिलते हैं। एक की फ़िक्र दूसरे से टकराती है। मफ़ादे ज़ाती पेशे नज़र है। रवादारी बरतने पर वैसे हो जाते हैं जैसे सब हैं। अगर उस में आ़फ़ियत तलाश करते हैं कि उसी हमाम में उतर जाएं जिस में सब बरहना हैं तो परहेज़गारी को दावँ पर लगाना होगा और अगर ऐसा नहीं करते हैं तो आ़जिज़ी है महरूमियत है। दाएरए आज़ाद फ़िक्रों के हुदूद से धक्के मार कर बाहर निकाले जाते हैं। चुप रहें तो दम घुटता है अगर बात करें तो दस्ते निगारां से मुंह पर तमांचे पड़ें। या अल्लाह इतनी बड़ी काएनात में जहाँ जाऊं जहाँ देखूँ यही मंज़र है। इसी तरह की क़त्ल गहों ने महफ़िले यारॉं सजा रखी है। दुनिया की ख़बर लेने जाऊं तो अख़्बार के सफ़हात पर ऐसी हवसनाक और नफ़्स परस्ती की बर अंगेज़गी की दअ़्वत देती हुई गंदी तसवीरें सजाई गई हैं जिस से पत्तों से शर्मगाहों को ढाँकने वाले इन्तेहाई इब्तेदाई इंसानी समाज के अफ़राद भी शर्म से अपना मुंह ढाँप लें। येह आज की तहज़ीब के शाकी इंसान की फ़रियाद है। उसकी फ़रियाद है जो अल्लाह तआ़ला की अहदीयत, समदीयत, और क़ुदरत और सरमदीयत पर ईमान रखता है और उसे यक़ीन है कि ख़ालिक़ ने इस दुनिया को ख़ल्क़ किया और इस दुनिया की मख़्लूक़ात में इन्सान को अअ़्ला तरीन और अशरफ़ तरीन मख़्लूक़ क़रार दिया है। और उसने न इस दुनिया को और न इस पर बसने वाले इंसानों को बे मक़सद पैदा किया है। ज़ाहिर है जब मोमिन जिस की मताए़ ह़यात ईमान है और इस पर ज़र्ब लगेगी तो वोह बेचैन होगा जितना कारी तागूती ज़ख़्म होगा उतनी बेचैनी और कर्ब ज़्यादा होगा। फ़रियाद न करे तो फिर और क्या करे। हमें इन फ़रियादों की आवाज़ क़दीम ज़माने से सुनाई दे रही है येह और बात है अ़ह्द ब अ़ह्द मर्दुम सोज़ और इन्सानियत की तबाहकारियों के ज़ाविये बदलते रहे हैं।

सवाल येह पैदा होता है कि जिसने अ़ह्दे हाज़िर में अपनी आँख खोली शऊ़र को ईमान की रोशनी दी और अल्लाह तआ़ला की उ़बूदियत को अपना सरमायए हयात समझा और उस पर गहरा यक़ीन रखा बस येह मसाएब, येह रुकावटें, येह ज़ह्र में बुझी हुई शहवाती अदा के इश्तेहारात अपनी मअ़्सियत की रोशनी में बिखेरते रंग वाले शहवत ज़ा पोस्टरों से अपने दाएरए अ़मल में बुलाने वाले अ़वामिल सिर्फ़ इसी अ़ह्द के ईमान वालों के लिए सख़्त आज़माइश का अ़ह्द है या येह आज़माइश, येह आफ़तें, येह मअ़्सियतें क़दीम ज़माने से अपने अपने अ़ह्द के ईमान की पनाहगाहों में टूटती रही हैं। और अपनी तबाहकारियों से किसी बेगुनाह को नहीं बख़्शा है? और अगर येह सच है कि क़दीम ज़माने से जब से मुअर्रिख़ ने क़लम संभाला है उस ज़माने से बड़ी बड़ी दुख भरी दास्तानें रक़म तराज़ की हैं जिन के हर हर हर्फ़ से मअ़्सूम और कमज़ोरों का ख़ून टपक रहा है तो किस के बल बूते और किस के सहारे इतने दुख उठाए, दर्द सहे, ठोकरें खाईं, ज़ख़्मी हुए या आख़िर शहीद हुए और फिर अ़ह्द के आख़िर में अपनी वेरासत को आनेवाले अशरफ़ इन्सानों को दे कर आख़ेरत की तरफ़ कूच कर गए। क़दीम ज़माने के अफ़राद आख़िर नहीं रहे लेकिन उनका इस्तेग़ासा किसी अ़दालत करने वाले को अ़ह्द ब अ़ह्द सिलसिले वार तलाश कर रहा है। चुनाँचे इस्तेग़ासा ख़ुद बोल रहा है कि कोई मज़बूत सहारा है कोई ज़माने का साहब है जिस के इन्तेज़ार के मरकब पर उम्मीद की शहज़ादी का सफ़र जारी है। येह इस्तेग़ासा मायूसी का बोसीदा लेबास नहीं पहने हुए है।

बल्कि हर अ़ह्द में येह ख़लअ़ते नौ में नज़र आता है। येह असास है बक़ाए सबात क़दमी की। इस इस्तेग़ासे में क़ुदरत के अ़ह्द-ओ-पैमान की वोह जल्वागाहें नज़र आती हैं जहाँ उम्मीद के हज़ारों चराग़ रोशन हैं। उसकी वजह येह

बक़िया सफ़हा न. ३२

हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम और हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम

हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम ने मैदाने करबला में जो आवाज़े इस्तेग़ासा बलंद की थी वोह करबला में ख़त्म नहीं हुई बल्कि उस में इज़ाफ़ा होता जा रहा है। उस आवाज़ पर उन लोगों ने भी लब्बैक किया था जो उस वक़्त दुनिया में न थे बल्कि आलमे अरवाह में उस आवाज़ को सुन रहे थे।

हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की शहादत और हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम के ज़हूर में बड़ा गहरा रब्त है। हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की हदीसों और ज़ियारतों में हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम का तज़केरा और हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम के कलमात में हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के मसाएब का ज़िक्र है मज़मून की महदूदियत को मद्दे नज़र रखते हुए ज़ैल में मुख़्तसर सा जाएज़ा लेते हैं।

(१) हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम की निगाह में:

सअ़द बिन अ़ब्दुल्लाह क़ुम्मी का बयान है मैंने हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम से ''काफ़ हा या ऐन साद' की तावील दरियाफ़्त की।

फ़रमाया:

''ये ग़ैब के हुरूफ़ हैं ख़ुदावंद आलम ने अपने बंदे जनाब ज़करिया को उस से आगाह किया था फिर वही बात हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही से बयान फ़रमाई। जनाब ज़करिया ने ख़ुदा से दरख़ास्त की थी उन्हें असमाए ख़मसा (पाँच नाम) तअ़्लीम किये जाएं ख़ुदा ने जिब्रईल के ज़रीए ये नाम तअ़्लीम दिये।

जनाब ज़करिया जब मोहम्मद, अ़ली, फ़ातेमा और हसन का नाम लेते थे तो उनका रंज-ओ-ग़म दूर हो जाता था लेकिन जब हुसैन अलैहिस्सलाम का नाम लेते थे तो ग़म ज़्यादा हो जाता था। एक दिन उन्होंने ख़ुदा से दरियाफ़्त किया ख़ुदाया जब मैं चार नाम लेता हूँ तो आराम-ओ-सुकून मिलता है लेकिन जब हुसैन का नाम लेता हूँ तो रंजीदा हो जाता हूँ आँखों से आँसू रवाँ हो जाते हैं। उस वक़्त ख़ुदा ने उन कलमात के ज़रीए दास्तान बयान की।

'काफ़' से करबला, 'हा' से इतरते ताहेरा की हलाकत-ओ-शहादत, 'या' से यज़ीद ज़ालिम, 'ऐन' से अ़तश-ओ-प्यास, 'साद' से सब्रे इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम।

येह सुन कर जनाब ज़करिया इस क़द्र ग़मज़दा हुए कि तीन दिन तक अपनी मेहराबे इबादत से बाहर नहीं आए और न किसी को अपने पास आने दिया मुसलसल रोते रहे ख़ुदाया तेरी बेहतरीन मख़्लूक़ के फ़रज़ंद पर मुसीबत नाज़िल होने वाली है उस पर मैं ग़मज़दा हूँ।

ख़ुदाया मुझे ऐसा फ़रज़ंद अ़ता कर जो पीरी में मेरा सहारा हो और मेरी आँखों की रोशनी हो। वोह मेरा वारिस हो और मेरा वसी हो फिर उसके ग़म में मुझे मुब्तेला कर जिस तरह तूने अपने हबीब मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही को उनके फ़रज़ंद के ग़म में मुब्तेला किया है। ख़ुदा ने जनाब ज़करिया को यहया अ़ता किया और उनके ग़म में मुब्तेला किया। जनाब यहया और हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम दोनों के हम्ल की मुद्दत ६ माह है।

(कमालुद्दीन, जिल्द २, सफ़हा ४२०)

हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की निगाह में

हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि हारिस अऊर ने हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम से 'वश्शम्से वज़ोहाहा' के बारे में दरियाफ़्त किया। फ़रमाया: उससे हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही मुराद हैं। 'वल क़मरे इज़ा तलाहा' के बारे में दरियाफ़्त किया। फ़रमाया: उससे हज़रत अमीरुल मोमेनीन अलैहिस्सलाम मुराद हैं। जो हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही के बअ़्द

हैं। 'वन्नहारे इज़ा जल्लाहा' के बारे में दरियाफ़्त किया। फ़रमाया:

ज़ालेकल क़ाएमो मिन आले मोहम्मदिन यम्लउल अर्ज़ा क़िस्तंव व अ़द्ला।'

उस से हज़रत क़ाएमे आले मोहम्मद मुराद हैं जो ज़मीन को अ़द्ल-ओ-इंसाफ़ से भर देंगे।

(तफ़सीरे फ़ुराते कूफ़ी, स. २१२)

हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम मुन्तक़िमे ख़ूने हुसैन अलैहिस्सलाम

हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम और उनके असहाब की मज़्लूमाना शहादत का इन्तेक़ाम हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम लेंगे। हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने क़ुरआने करीम की इस आयत

व मन क़ोतेला मज़्लूमन फ़क़द जअ़ल्ना लेवलीयेही सुल्तानन फ़ला युस्रिफ़ फ़िल् क़त्ले इन्नहू कान मन्सूरा
जो मज़्लूम क़त्ल कर दिया गया हम ने उनके वुरसा के लिए हक़ व हुकूमत क़रार दी है वोह क़त्ल में इसराफ़ नहीं करेंगे।

की तावील के बारे में फ़रमाया:

मज़्लूम से हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम मुराद हैं और उनके वुरसा हैं और जब हमारे क़ाएम का ज़हूर होगा वोह उनके ख़ून का बदला लेंगे और क़त्ल करेंगे यहाँ तक कि लोग कहेंगे कि इसराफ़ किया।

(तफ़सीरे बुरहान, जिल्द, २, सफ़हा ४१९; बेहार, जिल्द १०, सफ़हा १५)

इसराफ़ यअ़्नी बे गुनाहों को क़त्ल करना। इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम मअ़्सूम हैं उनके ज़रीए किसी बे गुनाह के क़त्ल होने का सवाल नहीं है। येह उन लोगों का ख़याल है जो क़ातिलाने इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम सिर्फ़ उन लोगों को भी जुर्म में बराबर का शरीक समझता है जो किसी पर राज़ी रहते हैं और ज़ालिम के फ़ेअ़्ल की तौज़ीह-ओ-तावील करते हैं और उसको बेगुनाह साबित करने की कोशिश करते हैं। आज भी कितने ऐसे बदबख़्त हैं जो यज़ीद और दीगर क़ातिलाने इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की तअ़्रीफ़ कर रहे हैं इन तमाम लोगों से इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम इन्तेक़ाम लेंगे।

इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की ज़बानी तज़केरए इमाम महदी अलैहिस्सलाम

हज़रत इमाम ज़माना अलैहिस्सलाम को ज़ियारते आशूरा में 'मन्सूर' के नाम से याद किया गया है ईसा अल ख़श्शाब ने हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम से दरियाफ़्त किया। क्या साहेबे अम्र आप हैं? फ़रमाया:

ला वलाकिन साहेबो हाज़ल अम्रित्तरीदुश्शरीदुल मौतूरो बेअबीहिल मुकन्ना बेअ़म्मेही यज़ओ सैफ़हू अ़ला आतेकेही समानेयता अश्होरिन।

(कमालुद्दीन, जिल्द १, सफ़हा ३१८)

मैं साहेबे अम्र नहीं हूं लेकिन साहेबे अम्र वोह है जो लोगों की निगाहों से दूर है। बस्तियों से दूर जिस का ठिकाना है जो अपने वालिद के ख़ून का बदला लेगा। उनकी कुन्नियत उनके चचा की कुन्नियत होगी १८ महीनों तक तलवार उनके काँधों पर रहेगी।

तरीद और शरीद तक़रीबन हम मअ़्नी हैं तरीद और शरीद उसको कहते हैं जो लोगों की ना क़द्रियों की बेना पर उनसे दूर हो। लोगों ने हज़रत के वजूद की नेअ़्मत की क़द्र नहीं की, उस नेअ़्मत की क़द्र करने के बजाए ना क़द्री की। उनके ख़ानदान का क़त्लआ़म किया, ज़बान-ओ-क़लम से उनकी मुख़ालेफ़त की। ज़ेह्नों से उनकी याद भुलाने की हर मुमकिन कोशिश की।

अपने वालिद का इन्तेक़ाम लेंगे। इससे इमाम हसन अ़सकरी अलैहिस्सलाम भी मुराद हो सकते हैं क्यूंकि उनको ज़ह्र के ज़रीए शहीद किया गया और हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम भी मुराद हो सकते हैं।

हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम और ज़िक्रे इमाम हुसैन

हज़रत इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम ने ज़ियारते नाहिया में इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम को इस तरह याद किया है:

आप फ़रज़ंदे रसूल हैं। आप क़ुरआने करीम की सनद और सहारा हैं। आप उम्मत के मददगार और सुतून हैं। इताअ़ते परवरदिगार में नेहायत सर गर्म, .

अहद-ओ-पैमान की हेफ़ाज़त करने वाले गुनाहगारों की रविश से दूर दर्दमंद, तवील रुकूअ् और सज्दा करने वाले, दुनिया की रंगीनियों से मुंह फेरे हुए इस तरह मुँह फेरे हुए जैसे कोई सफ़र कर रहा हो। दुनिया को वहशत की निगाहों से देखते थे।

(बेहारुल अनवार, जिल्द १०१, सफ़हा २३९)

इस तरह इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम ने अपने जद्दे अमजद की १० सिफ़ात और ख़ुसूसियात का तज़केरा किया है हक़ीक़त येह है कि हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम और हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम एक दूसरे को बहुत ज़्यादा अज़ीज़ और दोस्त रखते हैं और दोनों ही एक मक़सद की तकमील करने वाले हैं एक दीन की हेफ़ाज़त करने वाले एक दीन को सारी दुनिया में अमली तौर पर नाफ़िज़ करने वाले हैं।

हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम और रोज़े आशूरा

जिस तरह अमीरुल मोमेनीन अलैहिस्सलाम का लक़ब हज़रत अली इब्ने अबी तालिब अलैहिस्सलाम से मख़्सूस है उसी तरह क़ाएम का लक़ब हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम से मख़्सूस है।

अबू हमज़ा सुमाली ने हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से दरियाफ़्त किया। क्या आप क़ाएम नहीं हैं? और क्यूं सिर्फ़ वलीयेअस्र को क़ाएम कहा जाता है? फ़रमाया:

जब मेरे जद्द इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम क़त्ल किये गए मालएका ने बलंद आवाज़ में गिरिया-ओ-फ़ोगाँ की और ख़ुदा की बारगाह में फ़रियाद की। ख़ुदाया क्या तू उन लोगों को छोड़ देगा जिन्होंने तेरे मुन्तख़ब और मुन्तख़ब शुदा के फ़र्ज़न्द और तेरी बेहतरीन मख़्लूक़ को क़त्ल किया है?

ख़ुदा ने फ़रिश्तों पर वही की: ऐ मेरे मलाएका ज़रा सब्र-ओ-सुकून से काम लो मुझे क़सम है मेरे इज़्ज़त-ओ-जलाल की मैं उन लोगों से ज़रूर बिज़्ज़रूर इन्तेक़ाम लूँगा गर्चे कुछ दिनों के बाद ही क्यूं न सही। फिर ख़ुदावंद आलम ने इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की नस्ल के इमामों से पर्दा उठाया येह देख कर मलाएका ख़ुश हो गए और उन्होंने देखा कि उन इमामों में एक क़याम की हालत में है ख़ुदा ने फ़रमाया **'बेहाज़ल क़ाएम इन्तक़िम मिन्हुम'** मैं इस क़ाएम के ज़रीए उन लोगों से इन्तेक़ाम लूँगा।

(दलाएलुल इमामा, तबरी, सफ़हा २३९)

हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम और तमन्नाए नुसरते इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम

हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के हमराह शहादत की सआदत हासिल करना नेहायत अज़ीम कामियाबी और फ़ौज़े अकबर है जिस का तज़केरा बार बार ज़ियारते वारिसा में करते हैं काश हम भी आप के हमराह होते और इस अज़ीम कामियाबी को हासिल करते हज़रत इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम ने ज़ियारते नाहिया में इन अल्फ़ाज़ में इस अज़ीम तमन्ना का तज़केरा फ़रमाया है:

ऐ मेरे जद्दे मज़्लूम गर्चे मैं इस दुनिया में बअ्द में आया और तक़दीरे इलाही से मैं आप की नुसरत न कर सका। लेकिन मैं आप पर सुब्ह-ओ-शाम गिरिया-ओ-बुका करूँगा और आँसुओं के बदले ख़ून रोऊंगा।

इस से अंदाज़ा होता है कि हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम की नज़र में हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की नुसरत-ओ-मदद करने का कितना बड़ा दर्जा है। हज़रत इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम ही हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के मिशन को मुकम्मल करेंगे और जिस दीन की ख़ातिर सय्यदुश्शोहदा अलैहिस्सलाम ने क़ुर्बानी दी है उसी दीन को सारी दुनिया में नाफ़िज़ फ़रमाएंगे। इन्शाअल्लाह

रोज़ेआशूरा और रोज़े ज़हूर

हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम के ज़हूर के लिए कोई ख़ास दिन इस तरह मुअय्यन नहीं है कि बस ज़हूर उसी दिन होगा लेकिन रवायतों में कुछ दिनों का ज़िक्र ज़रूर है जिस दिन ज़हूर की ज़्यादा उम्मीद है यअ्नी उस दिन ज़हूर की ज़्यादा तवक़्क़ो की जा सकती है। बअ्ज़ रवायतों में जुम्आ का ज़िक्र है और बअ्ज़ में आशूर का ज़िक्र है बअ्ज़ में रोज़े शंबा का भी तज़केरा मिलता है इन रवायतों

को इस तरह जमा (जम्अ् किया जा सकता है कि जुम्आ और रोज़े आशूरा एक ही दिन हो सकते हैं। जुम्आ का दिन ज़हूर का दिन होगा और शंबा का दिन ज़हूर के इस्तेक़रार का दिन होगा। इस तरह शहादत का दिन जुम्आ ज़हूर का दिन होगा और शंबा का दिन ज़हूर के इस्तेक़रार का दिन होगा। इस तरह शहादत का दिन ही दीन के इस्तेक़रार और नाफ़िज़ होने का दिन होगा। शहादत का दिन ही तमाम बातिल ताक़तों की नाबूदी का दिन होगा।

हज़रत इमाम जअ्फ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

तेईस (२३) माहे मुबारक रमज़ान को हज़रत क़ाएम अलैहिस्सलाम के नाम से नेदा दी जाएगी और रोज़े आशूरा उनके क़याम का दिन होगा जिस दिन हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम को शहीद किया गया।

(ग़ैबते तूसी, सफ़हा ४७४)

गोया शबे क़द्र में हज़रत वलीये अस्र अलैहिस्सलाम के ज़हूर का फ़ैसला हो जाएगा उनको ज़हूर की इत्तेला दे दी जाएगी और आशूर का दिन उनके क़याम और ज़हूर का दिन होगा।

हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम की पहली तक़रीर

ज़हूर के बाद हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम अपनी पहली तक़रीर में अपना तआरुफ़ इस तरह कराएंगे जिस से वाज़ेह हो जाएगा कि ज़हूर और शहादत में किस क़द्र गहरा राबेता है।

जिस वक़्त हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम का ज़हूर होगा वोह हजरे असवद और मक़ामे इब्राहीम के दरमियान खड़े हो कर इस तरह अपना तआरुफ़ कराएंगे:

अला या अहलल आलमे अनल इमामुल क़ाएम

ऐ दुनिया वालों आगाह हो जाओ मैं ही इमामे क़ाएम हूँ।

अला या अहलल आलमे अनस्सम्सामुल मुन्तक़िम

ऐ दुनिया वालों जान लो मैं इन्तेक़ाम लेने वाली तलवार हूँ।

अला या अहलल आलमे अन्ना जद्दिल हुसैन क़तलूहो अतशाना।

ऐ दुनिया वालों सुन लो मेरे हुसैन को प्यासा शहीद किया गया।

अला या अहलल आलमे अन्ना जद्दिल हुसैन तरहूहो उरयाना।

ऐ दुनिया वालों मेरे हुसैन को बे गोर-ओ-कफ़न ख़ाक पर छोड़ दिया गया।

अला या अहलल आलमे अन्ना जद्दिल हुसैन सहकूहो उदवाना।

ऐ दुनिया वालों मेरे जद्द हुसैन को क़त्ल के बाद पाएमाल किया गया।

(मजल्लए इन्तेज़ार, साले अव्वल, शुमारा दुव्वुम, सफ़हा १७८)

हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम पहले अपने इमाम क़ाएम होने का एअ्लान करेंगे फिर शमशीरे इन्तेक़ाम का तज़केरा करेंगे फिर हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के मसाएब बयान करेंगे। हज़रत अपने कलाम का आगाज़ इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की मज्लिस से करेंगे जिस से अंदाज़ा हो जाएगा हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के मसाएब बयान करना किस क़द्र अहम है और येह भी वाज़ेह हो जाता है कि हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की शहादत के मक़ासिद की तकमील हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम का ज़हूर पुरनूर है। और येह भी वाज़ेह हो जाता है जो लोग मसाएबे सय्यदुश्शोहदा बयान कर रहे हैं वोह अपने इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम की सीरत-ओ-सुन्नत पर अमल कर रहे हैं और जो लोग उसमें रुकावट ईजाद करना चाहते हैं वोह ख़ुद ही अपना फ़ैसला करलें।

हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम और इन्तेक़ामे ख़ूने इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम

हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम ने इमाम ज़ैनुल आबिदीन अलैहिस्सलाम से फ़रमाया:

ख़ुदा की क़सम मेरा ख़ून उस वक़्त तक जोश मारता रहेगा यहाँ तक कि ख़ुदावंद आलम महदी को ज़ाहिर करे वोह मेरे ख़ून का इन्तेक़ाम लेंगे

और ७० हज़ार मुनाफ़िक़, फ़ासिक़ और काफ़िर को क़त्ल करेंगे।

(मनाक़िबे इब्ने शहरे आशोब, जिल्द ४, सफ़हा ८५, बेहारुल अनवार, हदीस ४५, सफ़हा २९९)

हज़रत इमाम अ़ली रज़ा अ़लैहिस्सलाम की ख़िदमत में रावी ने अ़र्ज़ किया। इस रवायत के बारे में आप क्या फ़रमाते हैं कि हज़रत इमाम जअ़्फ़र सादिक़ अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

जिस वक़्त हमारे क़ाएम क़याम फ़रमाएंगे इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम के क़ातिलों के वुरसा को उनके वालिद की गुनाह पर क़त्ल करेंगे। फ़रमाया: हाँ येह हदीस सहीह है।

अ़र्ज़ की फिर कुरआने करीम की इस आयत का क्या मफ़हूम है।

वला तज़ेरो वाज़ेरतुन विज़रा उख़रा

कोई एक दूसरे के गुनाह का बोझ नहीं उठाएगा।

फ़रमाया:

ख़ुदा ने दुरुस्त फ़रमाया है लेकिन चूँकि येह लोग अपने आबा-ओ-अजदाद के काम से ख़ुश थे और उस पर फ़ख़्र करते थे। अगर कोई शख़्स किसी काम पर राज़ी हो तो वोह उस काम को अंजाम देने वाले की तरह है। अगर कोई मशरिक़ में क़त्ल किया जाए और दूसरा मग़रिब में उस क़त्ल पर राज़ी हो, ख़ुशनूद हो तो वोह भी ख़ुदा के नज़दीक क़ातिल के साथ गुनाह में शरीक है। येह कि क़ाएम अपने ज़हूर के वक़्त इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम के क़ातिलों के फ़र्ज़न्दों को क़त्ल करेंगे वोह इस बेना पर कि वोह लोग अपने आबा-ओ-अजदाद के काम से राज़ी थे।

(एलुलुश् शराएअ़, जिल्द १, सफ़हा २१९, अ़ोयूने अख़बारे रिज़ा, जिल्द १, सफ़हा २७३, बेहारुल अनवार, जिल्द ५२, सफ़हा ३१३)

हज़रत इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम और तकमीले सफ़रे इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम

हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम ने मक्का-ए-मुकर्रमा से कूफ़ा का सफ़र किया था और वोह कूफ़ा में क़याम करना चाहते थे मगर ज़ालिमों ने हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम का येह सफ़र मुकम्मल होने न दिया उनको कूफ़ा में दाख़िल होने नहीं दिया बल्कि करबला में शहीद कर दिया। हज़रत इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम ज़हूर के बअ़्द कूफ़ा को अपना मरकज़ क़रार देंगे।

हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

महदी ज़ाहिर होंगे वोह कूफ़ा तशरीफ़ ले जाएंगे और वहीं उनका घर होगा।

(बेहारुल अनवार, जिल्द २५, सफ़हा २२५)

एक दूसरी रवायत में फ़रमाया:

जिस वक़्त हमारे क़ाएम का ज़हूर होगा वोह कूफ़ा जाएंगे उस वक़्त हर मोमिन हज़रत महदी के शहर में ज़िंदगी बसर करेगा या वहाँ ज़रूर जाएगा।

(बेहारुल अनवार, जिल्द ५२, सफ़हा ३८५)

इस तरह की रवायतों से वाज़ेह होता है कि कूफ़ा हज़रत इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम का पाया-ए-तख़्त होगा वहीं आप का क़याम होगा और वहीं से सारी दुनिया पर हुकूमत करेंगे।

अन्सारे इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम अन्सारे इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम

हज़रत इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के लशकर में जहाँ मोमिन होंगे वहीं आसमानी फ़रिश्ते भी होंगे। रय्यान बिन शबीब ने हज़रत इमाम अ़ली रज़ा अ़लैहिस्सलाम से रवायत नक़्ल की है:

हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की नुसरत-ओ-मदद के लिए आसमान से चार हज़ार फ़रिश्ते नाज़िल हुए जब ये करबला पहुंचे इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम शहीद हो चुके थे। उस वक़्त से फ़रिश्ते हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की क़ब्रे अतहर पर ग़म ज़दा और ग़ुबार आलूद हैं यहाँ तक कि हज़रत क़ाएम का ज़हूर हो उस वक़्त ये फ़रिश्ते उनके अअ़्वान -ओ-अन्सार में शुमार होंगे और उनका नारा व शेआर होगा या लिसारातिल हुसैन

इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के खूने ना हक़ का बदला।
(अमाली सुदूक़, मज्लिस २७, बेहारुल अनवार, जिल्द ४४, सफ़हा २८५)

हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की नुसरत की तमन्ना हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम की नुसरत करके पूरी हो सकती है लेहाज़ा हर वोह शख़्स जो ज़ियारते वारिसा पढ़ते वक़्त येह तमन्ना करता है काश मैं भी मैदाने करबला में होता वोह इस ज़माने में हज़रत इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम की नुसरत-ओ-मदद करके येह अज़ीम तरीन सआदत हासिल कर सकता है। ग़ैबत के ज़माने में हज़रत इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम की नुसरत-ओ-मदद करके येह अज़ीम तरीन सआदत हासिल कर सकता है। ग़ैबत के ज़मानें में हज़रत इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम के तज़केरे को आम करना, लोगों के दिल में उनकी मोहब्बत में इज़ाफ़ा करना उनकी याद दिलाना, उनके तअल्लुक़ से लोगों के दिलों से शुकूक-ओ-शुबहात को दूर करना इमाम अलैहिस्सलाम के ज़हूर के लिए लोगों को आमादा करना उनके ज़हूर के लिए सरतापा इन्तेज़ार में रहना.... येह सब नुसरते इमाम के तरीक़े हैं जिस क़द्र हो सके इस राह में क़दम बढ़ाएं और हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की नुसरत की तमन्ना पूरी करें।

रोज़े वेलादते इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम और यादे इमाम महदी अलैहिस्सलाम

३, शाबान सरकारे सय्यदुश्शोहदा इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम का रोज़े वेलादत है। येह मुबारक दिन अह्ले बैत अलैहिमुस्सलाम और उनके शीओं और दोस्तों के लिए नेहायत ख़ुशी का दिन है येह दिन निगाहे परवरदिगार में एक अज़ीम दिन है इसी अज़ीम दिन की मुनासिबत से ख़ुदावंद आलम ने सरकारे रेसालत की ख़िदमत में सब्ज़ रंग की तख़्ती पर नूर से लिखी हुई हदीस तोहफ़े में भेजी थी जिस को हदीसे लौह कहते हैं इस हदीस में चहारदा मासूमीन अलैहिस्सलाम की रेसालत व वेलायत और इमामत का तज़केरा है हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम का ज़िक्र ख़ास तौर से किया गया है अल-मुन्तज़र के मुतअद्दिद शुमारों में इस हदीस का तज़केरा हो चुका है इस लिए यहां उसका तज़केरा नहीं कर रहे हैं इस दिन के मख़सूस अअ्माल और दुआएं हैं इन दुआओं में हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के साथ हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम का तज़केरा है एक दुआ में इस तरह है:

ख़ुदाया मैं इस दिन मुतवल्लिद होने वाले फ़र्ज़न्द के हक़ का वास्ता दे कर तेरी बारगाह में दस्त ब दुआ हूँ जिस की वेलादत के साथ साथ उसकी शहादत की ख़बर दी गई जिस की शहादत पर ज़मीन व आसमान और उनमें मौजूद तमाम मख़्लूक़ात ने गिर्या किया और जिन की शहादत के एवज़ में उनकी नस्ल में इमामत क़रार दी गई उनकी तुर्बत में शेफ़ा और जिन की हमराही में सआदत व कामयाबी क़रार दी गई और उनकी ज़ुर्रीयत में क़ाएम क़रार दिए गए जिन के लिए ग़ैबत मुअय्यन की गई....

(मिस्बाहुल मुतहज्जिद, स. ७५८, मफ़ातीहुल जिनान अअ्माल रोज़े सेव्वुम शाबान)

रोज़े वेलादते हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम और तज़केरए इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम

शबे क़द्र के बाद १५ शाबान की रात सब से अज़ीम और बा बरकत शब है एक रात में क़ुरआने सामित नाज़िल हुआ तो दूसरी रात में क़ुरआने नातिक़। एक रात 'क़द्र' जो हज़ार महीनों से बेहतर है और दूसरी रात इस 'क़द्र' की अमली तफ़सीर है शबे क़द्र की तरह इस रात में भी रात भर इबादत करना बेहतरीन अमल है। इस बा फ़ज़ीलत शब का सब से बेहतर अमल हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की ज़ियारत है। और इस शान के साथ जो शख़्स एक लाख चौबीस हज़ार अंबिया अलैहिमुस्सलाम से मुसाफ़ेहा करना चाहता है उसे हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की ज़ियारत करना चाहिए।

गोया इस शब तमाम अंबिया अलैहिमुस्सलाम हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में उनके फ़र्ज़न्दे अज़ीज़

हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम की मुबारकबाद देने के लिए हाज़िर हुए हैं। आप के मक़सदे शहादत की तकमील और आप के दीन को सारी दुनिया में नाफ़िज़ करने वाले अज़ीम फ़र्ज़न्द की वेलादत आप को मुबारक हो।

शबे क़द्र और यादे इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम

साल की सब से बा फ़ज़ीलत शब शबे क़द्र है। येह शब हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम से मख़्सूस है इस रात में मलाएका और रूह साल भर के तमाम उमूर लेकर हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम की ख़िदमते अक़दस में नाज़िल होते हैं। इस शब का बा फ़ज़ीलत अमल हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की ज़ियारत है। इस रात में जो शख़्स हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की ज़ियारत करेगा उसे एक लाख चौबीस हज़ार अंबिया अलैहेमुस्सलाम की अरवाहे मुतह्हेरा से मुसाफ़ेहा करने का शरफ़ नसीब होगा।

रोज़े वेलादते इमाम महदी अलैहिस्सलाम भी ज़ियारत करने वाले को एक लाख चौबीस हज़ार अंबिया अलैहिमुस्सलाम की अरवाहे मुतह्हेरा से मुसाफ़ेहा का शरफ़ हासिल होगा और शबे क़द्र में भी ज़ियारत करने वाले को एक लाख चौबीस हज़ार अंबिया अलैहिमुस्सलाम की अरवाहे मुतह्हेरा से मुसाफ़ेहा का शरफ़ नसीब होगा। शायद इसकी वजह येह है कि १५ शाबान हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम की वेलादत की रात है और शबे क़द्र में हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम का ज़हूर पुर नूर मुअय्यन किया जाएगा, एक रात वेलादत की बेना पर मोहतरम है और रात तअय्युने ज़हूर की बेना पर मोहतरम है, दोनों रातें इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम से मख़्सूस हैं और दोनों रातों में इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की ज़ियारत है।

दुआए नुद्बा और ज़िक्रे इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम

इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम से मख़्सूस दुआओं में एक दुआ दुआए नुद्बा है जिस को हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम की नुसरत की तमन्ना रखने वाले हर जुम्आ को पढ़ते हैं और दिल की गहराइयों से अपने इमाम की फ़ुर्क़त-ओ-जुदाई में आँसू बहाते हैं और अपने दिल को अपने इमाम की याद से ताज़ा रखते हैं येह दुआ सनद के एअ्तेबार से और उलमा के मुसलसल अमल की बेना पर मोअ्तबर-ओ-मुस्तनद दुआ है इस दुआ में इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम के साथ हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम का तज़केरा है। दुआए नुद्बा के इन जुम्लों पर ग़ौर फ़रमाइये और इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम को याद फ़रमाइये: **ऐनल हसन, ऐनल हुसैन, ऐना अब्नाउल हुसैन,** *कहाँ है हसन, कहाँ हुसैन, कहाँ फ़र्ज़न्दाने हुसैन। कहाँ नेकूकार के बाद दूसरे नेकूकार, कहां सदाक़त के पैकर के बाद दूसरे पैकरे सदाक़त।* और फिर ख़ासतौर से इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम का तज़केरा इस तरह है।

ऐनत्तालिबे बेदमिलमक़तूले बेकरबला

कहां है मक़तूले करबला के ख़ूने नाहक़ का बदला लेने वाला।

इस तरह हर जुम्आ को इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम के साथ इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की याद भी ताज़ा होती है।

ज़ियारते आशूरा और ज़िक्रे इमाम महदी अलैहिस्सलाम

ज़ियारते आशूरा नेहायत मोअ्तबर और मुस्तनद ज़ियारतों में है। अइम्मए मअ्सूमीन अलैहिमुस्सलाम ने और ख़ास कर इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम ने इसके रोज़ाना पढ़ने की ताकीद की है और रवायतों में इसका बड़ा सवाब ज़िक्र किया गया है। इस ज़ियारत में भी हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम का तज़केरा है।

अँय् यर्ज़ोक़ोनी तलबा सारेका मअ़ा इमामिन मन्सूरे मिन अह्लेबैते मोहम्मद अलैहिमुस्सलाम।

ख़ुदा मुझे तौफ़ीक़-ओ-सआदत अता कर कि मैं अह्लेबैत अलैहिमुस्सलाम के इमामे मन्सूर के हमराह आप का इन्तेक़ाम ले सकूँ।

हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने, आयत ''**व मन क़तला मज़्लूमन**'' के ज़ैल में फ़रमाया।

समेयल महदी मन्सूरा

महदी को मन्सूर कहा जाता है जिस तरह हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही को अहमद-ओ-मोहम्मद कहा जाता है और जनाब ईसा को मसीह कहा जाता है।

यअ्नी हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम का एक नाम 'मन्सूर' भी है।

ज़ियारते आशूरा में है:

अँय् यर्ज़ोक़नी तलबा सारी मआ इमामिन महदीयिन ज़ाहेरिन नातेक़िन मिन्कुम

ख़ुदा मुझे हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम के साथ ख़ूने इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम का इन्तेक़ाम लेने की तौफ़ीक़ करामत फ़रमा इस तरह कि वोह ज़ाहिर हों और गुफ़्तुगू कर रहे हों।

इसी तरह इस फ़िक़रे में हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम के ज़हूर की भी दुआ है उनके साथ नुसरते हक़ की भी दुआ है और ख़ूने इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम का इन्तेक़ाम लेने की भी दुआ है।

रोज़े आशूरा और यादे इमाम महदी अलैहिस्सलाम

जिस तरह ज़ियारते आशूरा में हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम का तज़केरा है उसी तरह अअ्माले रोज़े आशूरा में एक अहम अमल हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की मुसीबते उज़्मा पर एक दूसरे को तअ्ज़ियत पेश करना है और इस तरह तअ्ज़ियत अदा करने का तरीक़ा सिखाया गया है:

अअ्ज़मल्लाहो ओजूरना बेमुसाबेना बिलहुसैने अलैहिस्सलाम व जअ्लना व ईयाकुम मिनत्तालेबीना बेसारेही वलीयेहिल इमामिल महदीये मिन आले मोहम्मद अलैहिमुस्सलाम।

ख़ुदावंद आलम हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की अज़ीम मुसीबत पर हमारे अज्र-ओ-सवाब में इज़ाफ़ा करे हमें और आप को इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के वारिस हज़रत महदी आले मोहम्मद के हमराह उनका इन्तेक़ाम लेने वालों में शुमार करे।

आप मुलाहेज़ा फ़रमाएं इस अज़ीम मुसीबत के दिन भी इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की मुसीबत के साथ हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम का तज़केरा है।

इमामे हुसैन अलैहिस्सलाम और रजअत

इस्लामी तअ्लीमात की रोशनी में जिस तरह हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम का ज़हूर क़तई और यक़ीनी है उसी तरह रजअत भी क़तई और यक़ीनी है रजअत यअ्नी हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम के ज़हूर के बाद जो लोग इस दुनिया से चले गए हैं वोह दोबारा ज़िंदा किये जाएंगे। रजअत को वही लोग मोहाल या बईद समझ सकते हैं जो क़यामत के क़ाएल नहीं हैं वोह लोग जो क़यामत में तमाम मुर्दों के दोबारा ज़िंदा होने के क़ाएल हैं उनके नज़दीक़ बअ्ज़ लोगों का क़यामत से पहले हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम के ज़हूर और उनकी हुकूमत के ज़माने में दोबारा ज़िंदा होना कोई तअ्ज्जुब ख़ेज़ बात नहीं है बल्कि सुन्नते ख़ुदा के मुताबिक़ है।

जिन लोगों की रजअत होगी उनमें एक इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम हैं। हज़रत इमाम जअ्फ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम की रवायत के मुताबिक़ सब से पहले जिस के लिए ज़मीन शिगाफ़्ता होगी और दुनिया में वापसी होगी वोह हज़रत हुसैन बिन अली अलैहिस्सलाम हैं।

(बेहारुल अनवार ५३, सफ़हा ३९, तफ़सीरे बुरहान, जिल्द २, सफ़हा ४०८)

एक दूसरी रवायत में हज़रत इमाम जअ्फ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने इस तरह फ़रमाया:

सब से पहले जिन लोगों की रजअत होगी वोह हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम और उनके असहाबे बा वफ़ा हैं उसी के साथ यज़ीद और उसके लश्कर की भी रजअत होगी येह सब के सब क़त्ल कर दिये जाएंगे।

उसके बाद हज़रत इमाम जअ्फ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने इस आयत शरीफ़ा की तिलावत फ़रमाई:

सुम्मा रदद्ना लकुमुल कर्रत अलैहिम व अम्दद्नाकुम्

बाक़ी सफ़हा न. १५ पर

मुस्तज़अफ़

मुक़द्दमा

तख़्लीक़े आ़लम से इन्सान तीन गरोह मे बँटे हैं। और इन तीन गरोह या तीन तबक़े के लोग हर जगह पाए जाते हैं। इन तीनों गरोह को इस्तेलाह में मुस्तज़अफ़ीन, मुतकब्बेरीन, और आ़म्मीन कहा जाता है। मुतकब्बिर अगर न होते तो मुस्तज़अफ़ कोई न होता। यही वोह तबक़ा है जो बरसरे ज़ुल्म-ओ-तशद्दुद रहता है। ज़ुल्म-ओ-सितमगरी, दबाव, फ़ेशार, मक्र-ओ-फ़रेब इस गरोह का शेवा है और उनके निशानों पर सिर्फ़ कमज़ोर तबक़े के लोग ही रहते हैं। राक़िमुल हुरूफ़ मुस्तज़अफ़ की तअ्रीफ़ और उसकी वज़ाहत भी करेगा। लेकिन उससे पहले एक वोह दरमियानी तबक़ा जो आ़म्मीन का है उस पर थोड़ी रोशनी डाल दें जिस पर बड़ी ख़ूबी के साथ मुतकब्बेरीन असर अंदाज़ होते हैं।

येह वोह अफ़राद होते हैं जो बैन बैन होते हैं जिन के दिल क़वी और वोह इरादे के पक्के नहीं होते हैं येह महरूमियत का शिकार होने की बेना पर कमज़ोर तो होते हैं लेकिन दोनों तरफ़ ढुलकने की सलाहियत रखते हैं। शायद इसी गरोह के मुन्तख़ब और नेक अफ़राद को असहाबे अअ्राफ़ कहा गया है। उसमें अक़ल्लीयत अगर पाक तीनत है और दूर अंदेश हैं तो वोह मुस्तज़अफ़ीन से मुतास्सिर हो कर उस तबक़े के साथ हो लेती है और उनकी रविश पर अपने अज़हाब-ओ-अफ़्कार को एक नूरे हयात की तरफ़ ले जाती है। ज़्यादा अफ़राद उस तरफ़ अपना ज़ेह्नी रुजहान रखते हैं जो मुतकब्बेरीन की ख़स्लतों, आदतों और अतवार, रफ़्तार, गुफ़्तार में शामिल हैं और वोह अपने गरोह के अफ़राद की पस्त सत्ह से उठ कर एक दूसरी बालाई सत्ह तक पहुंचने की कोशिश करते रहते हैं।

इस गरोह में भी बड़े बड़े हरफ़न मौला मिलेंगे जो अपने इर्द गिर्द एक नई टोली बना लेते हैं। मिसाल के तौर पर कहीं किसी तबक़े में अली मोहम्मद बाब, कहीं ग़ुलाम अहमद क़ादियानी, कहीं सियाह कपड़ा पहने सूफ़ी, कहीं मलंग की शक्लें नज़र आती हैं। येह सब मुस्तज़अफ़ की जानिब से राह फ़रार के वसीले के मुतलाशी हैं जो रस्म-ओ-रवाज और औहामे बेजा में गिरफ़्तार रहते हैं इस उम्मीद पर कि वोह भी जो कमज़ोर तबक़े से तअल्लुक़ रखते हैं लेकिन उसके ख़ोल से निकलने की तदबीर पर अ़मल करते हैं येह उसी तबक़े के लोग होते हैं जिन की अ़क़्ल और जिन का शऊर अपने उफ़ुक़ के लेहाज़ से तंग होता है और उनके क़दम राहे रास्त पर मज़बूती से नहीं होते और हिर्स-ओ-आज़ नहीं, वअ्दए इलाही पर कान धरने नहीं देते।

अगर जहाँ बीनी के लेहाज़ से परखा और जाँचा जाए तो मुस्तज़अफ़ जहाँ मुतकब्बेरीन से आलाम-ओ-मसाएब का सामना करते हैं वहीं उन तबक़े के लोग जिन का ज़िक्र किया गया है मुस्तज़अफ़ीन के लिए ईज़ा रसानी का बड़ा सबब बन जाते हैं। मिसाल हज़रत मुस्लिम की है आप का कूफ़ा में जो हाल हुआ है बिल्कुल साफ़ और आईनावार है, हज़ारों ख़त आए थे। हज़ारों ने आप के हाथ पर बैअ़त की थी और जब आख़िर में सिर्फ़ तीस अफ़राद रह गए थे तो उनकी औरतें उन्हें अपने घर वापस ले गईं और मुस्लिम कूफ़ा में तन्हा थे। मुस्लिम बिन अ़क़ील बिल्कुल कमज़ोर कर दिये गए थे ताहम अपने मन्सबे आ़ली की हेफ़ाज़त में डट कर क़याम किया। यही वोह आ़ली मतालिब हैं जो क़ुरआने करीम में इस्तज़्अफ़ू फ़िल अर्ज़ के नाम से याद किये गए हैं।

मुस्तज़अफ़ के मअ्ना, ज़ोफ़, ज़ईफ़, कमज़ोर, नहीफ़, नातवाँ, लाचार, बेबस, लाग़र, टूटा हुआ। हक़ से महरूम, ज़ुल्म के मुक़ाबिल मज़्लूम। पसमांदा, फ़क़्र का मारा हुआ, ग़रीब बे सहारा, मुतकब्बिर की ऐने ज़िद, यअ़्नी मज्बूर, बेकस, बे नवा, दर्द का सहने वाला, कर्ब में मुब्तेला। बस इन तमाम मअ़ाना-ओ-मतालिब

के साथ इस क़बील की और कैफ़ियात भी हैं जो मुस्तज़अफ़ के ज़ुम्रे में आती हैं। लेकिन मुस्तज़अफ़ उन मआना-ओ-मतालिब से हट कर अपने आला मरातिब और अपने अख़्लाक़ी शान-ओ- शौकत का भी मज़हर होता है। वह निडर और बे ख़ौफ़ होता है और फ़राएज़े मन्सबी में ग़फ़लत को जगह नहीं देता। इन्सानियत और रूहानियत का अलमबरदार होता है। जो काम दिया जाता है उसको अन्जाम देने में पीछे नहीं हटता क़ौल का पक्का होता है। बहादुर और शुजाअ् होता है। उसको अपने फ़र्ज़ के सामने मौत से डर नहीं लगता। मिसाल चाहिये तो सुलैमान जो बसरा में इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के सफ़ीर थे। उनकी हयाते तय्येबा पर लिखी गई तारीख़ को पढ़िये। क़ुरआने मजीद ने इसी इस्तेलाह में मुस्तज़अफ़ को लिया है।

दीने इस्लाम और मुस्तज़अफ़

सिर्फ़ दीने इस्लाम ही नहीं बल्कि तमाम साबिक़ अदियाने आलम जिन का सिलसिला दीने इस्लाम पर मुन्तहा होता है उन सब की पेश रफ़्ती मुस्तज़अफ़ीन यअ्नी वोह बंदगाने ख़ुदा जो कमज़ोर कर दिए गए थे और कमज़ोर कर दिए गए हैं की जद्दो जेहद, ईसार, क़ुर्बानी, हिम्मत, जुरअत, हौसला मंदी, सब्र, इस्तेक़ामत, इल्म, हिल्म, दूर बीनी, दूर अंदेशी, इब्लाग़-ओ-तबलीग़, क़ूवते बर्दाश्त, सबात क़दमी, ज़ुल्म के ख़ेलाफ़ अक़दाम, रोशन ज़मीरी, गुफ़्तार और रफ़्तार में एहतेयात, मुज़िर अनासिर से दामन कशी, कम सुख़नी ने वोह क़ूवत और क़ुदरत का हामिल बनाया कि बड़ी बड़ी ताक़तें भी दीन के परचम को सर निगूं न कर सकें और न उसके अअ्ला और अफ़लाकी अग़राज़-ओ-मक़ासिद को मिटाने में कामियाब हो सकें। चुनाँचे हाबील और क़ाबील से लेकर वोह तमाम अदियाने इलाही जिन का सिलसिला मुरसले अअ्ज़म के दीन, इस्लाम पर ख़त्म होता है उनकी तारीख़ में हादेसात का एक तवील सिलसिला है जहाँ एक तरफ़ मुस्तज़अफ़ीन करवट करवट कराह भी रहे हैं लेकिन नतीजे में उनकी बाला दस्ती का एअ्लान होता रहा है और उसके परचम का फरैरा आफ़ाक़ पर लहराता रहा है। और दूसरी तरफ़ उनके मुक़ाबले में मुतकब्बेरीन और तशद्दुद पसंद तकब्बुर का नशा उतरने के बाद टूट कर ख़ाक में मिल गए।

वअ्दए हक़

ख़ुदावंद मुतआल अपने हबीब मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही जो ख़ातिमुन्नबीईन हैं तमाम आलमीन के लिए आप को रहमत बनाया और आप पर जो किताब नाज़िल की जिसे क़ुरआन, फ़ुरक़ान, और किताबे आसमानी भी कहा जाता है उसमें नेहायत वज़ाहत-ओ-सराहत के साथ उस वअ्दे को दोहराया है जो ज़बूर से पहले इन्जील और तमाम आसमानी किताबों में इरशाद फ़रमाया है वोह वअ्दा येह है:

व नुरीदो अन्नमुन्न अलल्लज़ीनस्तुज़्एफ़ू फ़िल अर्ज़े व नज्अलहुम अइम्मतन व नज्अलहुमुल वारेसीन।
और हम ने इरादा कर लिया है कि हम एहसान करेंगे उन पर जो इस ज़मीन पर कमज़ोर कर दिये गए हैं और हम उनको इमाम और अपना वारिस क़रार देंगे।

दूसरी जगह क़ुरआने करीम अल्लाह तआला की नवाज़िशों का एअ्लान इस तरह करता है सूरए अअ्राफ़ की १३८ आयत इस तरह है:

व औरस्नल क़ौमल्लज़ीन कानू युस्तज़्अफ़ून मशारेक़ल अर्ज़े व मग़ारेबहा।
हमने मशरिक़ और मग़रिब तक सारी ज़मीन का वारिस मुस्तज़अफ़ को क़रार दिया है।

और अल्लाह तआला का इर्शाद है:

इन्नल्लाहा ला युख़्लेफ़ुल मीआद
ख़ुदा बेशक अपने वअ्दे के ख़ेलाफ़ नहीं जाएगा।

और वोह ख़ुदा तो वोह है जिस की क़ुदरते कामेला का ज़िक्र दुआए कुमैल में इस तरह है।

अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलोका बेइज़्ज़तेकल्लती वसेअत कुल्ला शै।
(ऐ ख़ुदा ऐ क़ादिर-ओ-मुतलक़) मैं तुझ से सवाल करता हूँ उस क़ुदरत के वास्ते से जो तमाम शै पर ग़ालिब है।

इस वअ्दए हक़ के बाद एक वोह मुतलाशी इंसान जो ख़ुदा परस्त है और ख़ुदा पर ईमान और यक़ीन रखता है उसके सामने तीन बाब खुलते हैं।

पहला बाब: ख़ुदा की क़ुदरते कामेला, वोह ख़ुदा वोह है जो क़ादिरे मुतलक़ है।

दूसरा बाब: अर्ज़े ख़ाकी की हयात-ओ-बिसात।

तीसरा बाब: वोह इंसान जो ईमान परवर है यक़ीन रखता है मोमिन है लेकिन मुस्तज़अफ़ है। यअ्नी कमज़ोर कर दिया गया है।

पहला बाब: वोह ख़ुदा वोह है जो क़ादिरे मुतलक़ है। हर शै पर उसकी क़ुदरत ग़ालिब है। और वोह सारी बशारतें उनको दे रहा है जो इस दुनिया में कमज़ोर कर दिये गए हैं यअ्नी मुतकब्बेरीन के ज़ुल्म-ओ-सितम का दरिया तुग़यानी पर है चुनाँचे ज़ियारते आशूरा में मिलता है अल्लाह की लअ्नत हो अबा सुफ़यान, मुआविया और यज़ीद इब्ने मुआविया पर हमेशा हमेशा, उस रोज़ जो रोज़े आले मरवान की ख़ुशी और शादमानियों का था इस लिए कि उस रोज़ इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम क़त्ल किये गए। यहाँ कभी कभी ज़ेह्न लड़खड़ाता है गोया चाहे बे-आब की जानिब प्यास बुझाने के लिए जाता है। और सवाल करता है। जब ख़ुदा इतनी क़ुदरत रखने वाला है तो उसके नेक बंदों पर येह शिकंजा, येह गिरफ़्ततारी क्यूँ। रोज़ बरोज़ मुतकब्बेरीन का फ़साद क्यों बढ़ता जा रहा है। ईमान वालों के लिए हर क़दम पर एक मुसीबत खड़ी है। एक फ़ित्ना सामने है। एक आज़माइश है। आख़िर ऐसा क्यूँ? (इस क्यूँ का जवाब मुंदर्जा ज़ैल है) जो आगे आएगा।

दूसरा बाब: पैकरे ख़ाकी इंसान इस दुनिया में आया है। इस दुनिया के लिए कहा जाता है येह फ़ना होने वाली है। लेकिन लाखों बरस गुज़र गए येह दुनिया जैसी थी वैसी है। और अल्लाह तआला के नेक बंदों के लिए हर तरफ़ असबाबे मसाएब हैं जैसे जैसे इस दुनिया की उम्र बढ़ती जाती है उस पर मुतकब्बेरीन पर बज़ाहिर शबाब आ रहा है। लेकिन मुस्तज़अफ़ीन के लिए गोया मुर्दा होती जा रही है। आख़िर क्यूँ?

तीसरा बाब: वोह जो अल्लाह तआला के नेक बंदे हैं वोह रोज़ बरोज़ नए हादेसात, आफ़ात-ओ-बलीयात से दो चार हैं एक अ़र्से के बाद भी कुशादगी की सूरत नज़र नहीं आती। आख़िर क्यूँ?

जवाबात (आख़िर क्यूँ)

पहले बाब के सवाल का जवाब सूरए मुल्क की पहली आयत है जिसका तरजुमा है:

बा बरकत ज़ात उस ख़ुदा की है जिसकी सल्तनत मुल्क है और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है। और उसने मौत और हयात को पैदा किया ताकि अपने बंदों को आज़माए (इम्तेहान ले) कौन नेक तरीन बंदे हैं उनके अअ्मल (की बुनियाद पर) और वही क़ुदरत रखने वाला बख़्शने वाला है।

दूसरे आख़िर क्यूँ का जवाब क़ुरआने करीम में इस तरह है:

एअ्लमू अन्नल्लाहा युहयिल अरज़ा बअ्दा मौतेहा जान लो! जब येह दुनिया मुर्दा हो जाएगी तो ख़ुदावंद मुतआल उसको अपनी क़ुदरत से फिर हयाते नौ बख़्शेगा।

यअ्नी जब दुनिया ज़ुल्म-ओ-जौर से भर जाएगी तो ख़ुदा अपने जॉनशीन और ख़लीफ़ा की हुकूमत क़ाएम करके उसको उसी तरह अ़द्ल-ओ-इन्साफ़ से रौशन और पुर बहार कर देगा।

तीसरे आख़िर क्यूँ का जवाब: मिसाल मशहूर है। ख़ुदा के यहाँ देर है अंधेर नहीं। उसका वअ्दा है, दीने इस्लाम दीने हक़ है .... सारी दुनिया के अदियान पर ग़ालिब हो कर रहेगा। और येह भी क़ुरआन का इर्शाद और हेदायत का एअ्लान है कि बक़ीयतुल्लाहिल अअ्ज़म यअ्नी जिस को हमने इस ज़मीन का वारिस और इमाम क़रार दिया है वोह ख़ैर-ओ-बरकते आसमानी का मरकज़ी वजूद है। उसके लिए बड़े एहतेमाम से दस्ते क़ुदरत ने काम लिया है। जिस का एक जाएज़ा क़दीम अक़वाम की पेश गोई से लेकर ग़दीर तक और ग़दीर से लेकर वेलादत बासआदत तक। और वेलादत से लेकर वक़्ते ज़हूर तक। ख़ुदावंद मुतआल ने

उस ज़ाते गेरामी क़द्र को बाक़ी रख कर गोया अपने अअ्ला और अरफ़अ् मक़सद के तहत अपने महबूब और मुन्तख़ब यअ्नी मुस्तज़अफ़ बंदों के लिए एक निशान क़ाएम कर दिया है ताकि मायूसी की गर्द उनके दामन पर बैठने न पाए और वोह ईमान के जादा पर साबित क़दम रहें।

चुनाँचे ख़ुदावंद मुतआल ने इर्शाद फ़रमाया:
व लक़द कत्बना फ़िज़्ज़बूरे मिम बअ्दिज़्ज़िक्रे अन्नल अर्ज़ा यरिसोहा एबादियस्सालेहून।
हम ने ज़बूर से पहले (तौरेत में) भी ज़िक्र कर दिया है कि हम अपने बंदों को इस ज़मीन का वारिस क़रार देंगे।

(सूरए अंबिया, आयत १०५)

ऐसी और भी आयतें हैं जिन का ज़िक्र तवील है और मज़मून की बिसात कम है।

हिन्दू मज़हब की किताब वेद जो सब से क़दीम ज़माने की है उसमें और जैन मज़हब की किताब जो उनकी सब से मुक़द्दस किताब मानी जाती है उसमें, ज़रतुश्त की किताब ''जामा सब'' इंजील, ज़बूर में ही नहीं बल्कि एक सिलसिला है पेशीन गोई का जो मुन्तहा होता है ग़दीर के एक अज़ीमुश्शान कसीर मजमअ् पर जिस की तअ्दाद एक लाख बीस हज़ार अफ़राद पर मुश्तमिल थी।

ग़दीर का तपता सहरा था। मुरसले अअ्ज़म अपने आख़री हज के अरकान को बजा लाकर वापस हो रहे थे आप के पीछे हाजियों के क़ाफ़ेले थे जो ताहद्दे नज़र अपने घरों की तरफ़ पलट रहे थे आफ़ताब आलमताब निस्फ़ुन्नहार पर था। उस तपते हुए सहरा में मुरसले अअ्ज़म ने तमाम हाजियों को क़याम करने का हुक्म दिया। इतने बड़े मजमअ् में मुरसले अअ्ज़म सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही ने मौलाए काएनात अली इब्ने अबी तालिब अलैहिस्सलाम के सर पर वेलायत, अपनी जॉनशीनी और ख़ेलाफ़त का ताज रखा येह कह कर **मन कुन्तो मौलाहो फ़हाज़ा अलीयुन् मौलाह**। और उसके बाद एक फ़सीह-ओ-बलीग़ ख़ुतबे के आगाज़ में अपनी रेहलत के बअ्द अपने बारह जॉनशीन का एअ्लान किया जिस के अव्वल अमीरुल मोमेनीन अली अलैहिस्सलाम हैं और बड़ी तफ़सील से अपने बारहवें जॉनशीन का एअ्लान किया नाम बताया, कुन्नियत बताई (उसका नाम मेरा नाम होगा और उसकी कुन्नियत मेरी कुन्नियत होगी)। बेहारुल अनवार और मुन्तख़बुल असर में अपने आख़री जॉनशीन का जो ज़िक्र फ़रमाया है इस तरह है क़ारेईन के लिए हम उसे पेश करेंगे।

मुरसले अअ्ज़म ने फ़रमाया:

१. ऐ लोगो आगाह हो जाओ कि मैं अज़ाबे ख़ुदा से डराने वाला हूँ और अली अलैहिस्सलाम हादी और रहनुमा हैं।
२. ख़बरदार हो जाओ ऐ लोगो! मैं पैग़ंबर और अली अलैहिस्सलाम मेरे वसी हैं।
३. आगाह हो जाओ कि ख़ातेमुल अइम्मा यअ्नी महदी, क़ाएम अलैहिस्सलाम हम से हैं।
४. आगाह हो जाओ कि वोह तमाम अदियान पर ग़ालिब आएगा।
५. ख़बरदार हो जाओ कि वोह ज़ालिमों से इन्तेक़ाम लेगा।
६. ख़बरदार हो जाओ कि वोह फ़ातेह और क़िलअ् शिकन और सरहदों को तोड़ने वाला होगा।
७. आगाह हो जाओ कि वोह मुशरिकों के तमाम क़बीलों को क़त्ल करने वाला होगा।
८. आगाह हो जाओ कि वोह अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल के तमाम औलिया का इन्तेक़ाम लेगा।
९. आगाह हो जाओ कि वोह दीने ख़ुदा का नासिर-ओ-मददगार होगा।
१०. आगाह हो जाओ कि वोह गहरे समंदरों से निकली हुई लहरें लेती हुई और साफ़ पानी से लबरेज़ नहर की तरह होगा।
११. आगाह हो जाओ कि निशानदेही करने वाला होगा दानिशमंद को उनकी दानिशमंदी के ज़रीए और ख़ूब पहचानेगा जाहिलों को उनकी जेहालत के साथ।
१२. आगाह हो जाओ कि वोह बरतर, बरगुज़ीदा और

ख़ुदा का इन्तेख़ाब शुदा होगा।

१३. ख़बरदार रहो कि वोह तमाम उ़लूम का वारिस और (उन उ़लूम पर) हावी होगा।

१४. याद रहे वोह ख़बर देने वाला परवरदिगार की तरफ़ से और होशियार करने वाला है उसके अम्र और ईमान के बारे में।

१५. याद रहे कि वोह मर्दे रुश्द-ओ-हेदायत है। ताक़तवर, मोहकम और पाएदार ज़ात है।

१६. याद रहे वोह रहनुमा, हुज्जत, बाक़ीमांदए ख़ुदा (बक़ीयतुल्लाह) है और उसके बअ्द कोई हुज्जत नहीं है हक़ फ़क़त और सिर्फ़ उसके और उसके नूर के साथ है।

१७. याद रहे उस पर कोई ग़ालिब नहीं आ सकता और उसे कोई शिकस्त नहीं दे सकता।

१८. याद रहे कि वोह लोगों के दरमियान अल्लाह तआ़ला का वली और यावर है वोह ख़ुदा के तमाम ज़ाहिर-ओ-पिन्हां का अमानतदार है।

(बेहारुल अनवार, जिल्द ३४, सफ़हा २१३, मोअ्जम अहादीसुल इमामिल महदी, जिल्द ५, सफ़हा १३५, मुन्तख़बुल असर, सफ़्हा १७४)

यहां पर उ़लमा लिखते हैं कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही ने ग़दीरे ख़ुम में मंसबे वेलायते अ़ली अ़लैहिस्सलाम के अ़लावा सिवाए महदी अरवाहना फ़िदाह के और दस जानशीनों के बारे में इतनी तफ़सील-ओ-तौज़ीह-ओ-सराहत–ओ-फ़साहत के साथ बयान नहीं किया है। इसकी वजह शायद येह हो जब नुक़्तए अव्वल और नुक़्तए आख़िर की सहीह मअ्रेफ़त हासिल होगी तो दरमियानी राबेता और वासता ख़ुद बख़ुद आ जाते हैं। इमामत हेदायत का वोह सिलसिला है जो हज़रत अमीरुल मोमेनीन अ़लैहिस्सलाम से शुरू होता है और हज़रत इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम पर तमाम होता है। येह इस्ना अ़शरी सिलसिला है इसमें अह्ले बैत अ़लैहिमुस्सलाम के अ़लावा कोई दूसरा नहीं है। इसकी दूसरी वजह येह है कि लोग अच्छी तरह से जान लें पहचान लें और आप के तआ़रुफ़ से बेख़बर न रहें और मुरसले अअ्ज़म सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही की इस ख़बर को अपने क़ल्ब के नेहां ख़ानों में न सिर्फ़ बाक़ी रखें बल्कि आनेवाली नस्लों को उस नूर की अमानत को वर्सादार क़रार देते हुए अपने अ़ह्द से गुज़र जाएं ताकि आनेवाले क़यामत तक आनेवाली उम्मते मुस्लेमा आफ़तों और हादेसात से महफ़ूज़ रहे। वर्ना ख़ुदावंद मुतआ़ल ने आप के वजूदे पाकीज़ा के लिए इतना एहतेमाम न किया होता कि मुसलसल क़दीम ज़माने से आज तक मुसलसल ख़बरों का सिलसिला अंबिया, औसिया और औलियाए ख़ुदा के ज़रीए क़ाएम न रहता। जहाँ तक उन ख़बरों के सिलसिलों के अदवार का तअ़ल्लुक़ है उसने चार मंज़िलें ली हैं।

पहली मंज़िल उन क़दीम किताबों में आप का ज़िक्र जैसे वेद, ज़रतुश्त के यहां जामा सब, इन्जील, ज़बूर।

दूसरी मंज़िल ग़दीरे ख़ुम की जहाँ मुरसले अअ्ज़म सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही ने ख़त्मे नबूवत की मोह्र लगाई और अपने बारह जॉनशीनों का एअ्लान किया वहीं बअ्दे वेलायत अली अ़लैहिस्सलाम बक़ीयतुल्लाहिल अअ्ज़म का तफ़सीली ज़िक्र फ़रमाया।

तीसरी मंज़िल: जब आप की वेलादत बासआ़दत हुई और ऐवाने ज़ुल्म-ओ-सितम में एक हलचल मच गई (कैसी हलचल मची उसका ज़िक्र आइंदा किसी मज़मून में होगा) एक कम सत्तर साल की ग़ैबते सुग़रा में नुव्वाबे ख़ास, जिन के अस्माए गेरामी हैं: (१) उ़समान बिन सईद (२) मोहम्मद बिन उ़समान (३) अबुल क़ासिम हुसैन बिन रौह नोबख़्ती (४) अ़ली मोहम्मद सैमुरी, के ज़रीए आपने रुश्द-ओ-हेदायात -ओ-फ़रमान–ओ-एहकाम का सिलसिला अपनी तौक़ीआ़त (ख़ुतूत) के ज़रीए क़ाएम रखा।

चौथी मंज़िल: ३२९ हि. में आप ग़ैबते कुब्रा में तशरीफ़ ले गए और मराजेअ् केराम के ज़रीए अ़वाम से अपने राबेते को क़ाएम रखा।

अब वोह दौर जिसे ज़हूर का दौर कहा जाता है अपने आसार-ओ-बरकात की नवेद इतनी दूर रह गई है कि जैसे किसी के आने की आहट सुनाई दे रही हो। मुरसले अअ्ज़म सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही की पेशगोइयाँ जैसे सदाए दिलनवाज़ी का लिबासे नौ पहन रही हों। इन्सानों

के ख़ून का दरिया ज़रूर लबरेज़ है लेकिन न शहीदों के यतीम बच्चे आप के ज़हूर से मायूस हैं और न उनकी बेवाएं अपने मौला के, जो मुन्तक़िम है, ज़हूर के इन्तेज़ार से ग़ाफ़िल हो कर पलक झपका रही हैं। आज तमाम आ़लम में बड़े ज़ोर-ओ-शोर से जनाब ज़हरा के जिगर पारा इमाम हुसैन का मातम हो रहा है जो एअ्लान कर रहा है उतना ही उभरेगा जितना कि दबा दोगे यअ्नी उम्मीदे ज़हूर मुन्तक़िमे ख़ूने हुसैन इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम के ज़हूर की उम्मीद का चिराग़ रोज़ बरोज़ रोशन से रोशन तर हो रहा है और एक चिराग़ से दूसरा चिराग़ रोशन हो रहा है गोया उम्मीद-ओ-इन्तेज़ार की दुनिया जगमगा रही है। लेबनॉन की जंग जब यहूदियों से हुई तो एक मोमिन औ़रत अपने शीरख़ार बच्चे का लाशा लिये जा रही थी। लोगों ने पूछा हाथों पर शीरख़ार का लाशा और लबों पर तबस्सुम जवाब में शेरदिल ख़ातून ने कहा क्या येह बच्चा अ़ली असग़र से ज़्यादा क़द्र-ओ-क़ीमत रखता है?

माँ का तबस्सुम उस हाल में, गोया उम्मीदों के बे शुमार चिराग़ तमाम आ़लम में रोशन कर दिये और ज़ालिम क़ौम को आगाह कर दिया कि हमारे इमामे बरहक़ की निगाहों के दाएरे से बच कर कहाँ जाओगे। वोह आएगा, और जल्द आएगा, उसके आने की आहटें साफ़ सुनाई दे रही हैं। अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल हम सब को उस जलीलुल क़द्र हस्ती जो पर्दए ग़ैब में है जब ज़हूर करे तो आप अ़लैहिस्सलाम के अअ्वान-ओ-अंसार में शामिल फ़रमाए। और वोह नेक और सालेह और ईमान पर साबित क़दम ख़ुदा के बंदे जो इस ज़मीन पर कमज़ोर कर दिये गए हैं यअ्नी मुस्तज़अ़फ़ हैं वअ्दए इलाही के मुताबिक़ इस दुनिया के वारिस क़रार पाएंगे। आमीन सुम्मा आमीन।

सफ़हा न. ९ का बाक़ी

बेअमवालिन व बनीना व जअ़ल्नाकुम अक्सरा नफ़ीरन।

(सूरए बनी इसराईल, आयत ६)

फिर हम तुम को उन लोगों पर दोबारा मुसल्लत करेंगे माल और औलाद से तुम्हारी मदद करेंगे और तुम्हारी तअ्दाद में इज़ाफ़ा करेंगे।

(बेहारुल अनवार, जिल्द ५३, सफ़हा ७६, नूरुस्सक़लैन, जिल्द ३, सफ़हा १४०)

हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर अ़लैहिस्सलाम की एक रवायत में है:

शबे आ़शूर हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम ने अपने असहाब से फ़रमाया:

.... तुम सब लोगों को जन्नत की बशारत हो ख़ुदा की क़सम जो कुछ हमारे साथ होने वाला है उसके बाद हम लोग उतने दिन आराम करेंगे जितना ख़ुदा चाहेगा।

सुम्मा युख़्रिजोनल्लाहो व ईयाकुम हत्ता यज़्हरा क़ाएमोना, फ़यन्तक़ेमो मिनज़्ज़ालेमीन।

फिर ख़ुदावंद आ़लम हमें और तुम को दोबारा ज़िंदा करेगा जब हमारे क़ाएम का ज़हूर होगा फिर ज़ालिमों से इन्तेक़ाम लिया जाएगा हम और तुम उन लोगों को रस्सियों और ज़ंजीरों में जकड़ा हुआ देखेंगे और बदतरीन अ़ज़ाब में मुब्तेला देखेंगे।

(किफ़ायतुल मोहतदी, सफ़हा १०५-१०६)

आप ने मुलाहेज़ा फ़रमाया हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम और हज़रत इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम में किस क़द्र गहरा रब्त है हर जगह एक दूसरे का तज़केरा है एक दूसरे की बशारत देने वाले और मक़ासिद की तकमील करने वाले हैं ख़ुदा वंद आ़लम हम सब को हज़रत वलीये अ़स्र अ़लैहिस्सलाम के मुख़्लिस ख़िदमतगुज़ारों में शामिल फ़रमा कर हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम के असहाबे बा वफ़ा के साथ महशूर फ़रमाए। आमीन

या रब्बल हुसैन बेहक़्क़िल हुसैन इश्फ़े सद्रल हुसैन बेज़ुहूरिल हुज्जा।

(येह मज़मून मजल्लए इन्तेज़ार साले अव्वल शुमारा दुव्वुम से इक़्तेबास किया गया है)

शर्हे ज़ियारते इमामे ज़मान अज्जलल्लाहो तआला बरोज़ जुम्आ

(अल-मुन्तज़र शआ़बान ख़ुसूसी शुमारा १४३१ हि. (पिछले शुमारे) से जारी)

अस्सलामो अ़लैका या मौलाया अना मौलाका आरेफुम् बेउलाका व उख़ाक

सलाम हो आप पर ऐ मेरे मौला, मैं आप का ग़ुलाम हूँ, आप के आगाज़-ओ-अंजाम दोनों की मअ्रेफ़त रखता हूँ।

ज़ियारत के इस फ़िक़रे में चार लफ़्ज़ों पर बहस की जा सकती है। मौला, आरिफ़, ऊला और उख़रा। लेकिन क्यूंकि लफ़्ज़ मौला पर अच्छी ख़ासी गुफ़्तुगू अल-मुन्तज़र के पिछले शुमारों में गुज़र चुकी है (बिलख़ुसूस ग़दीर का ख़ुसूसी शुमारा) इस लिए हम यहां सिर्फ़ इतना कहने पर इक्तेफ़ा करेंगे कि मौला अ़रबी के उन अल्फ़ाज़ में है कि जिन के मुतज़ाद मअ्ना होते हैं। दूसरे लफ़्ज़ों में मौला के मअ्ना आक़ा के भी हैं और ग़ुलाम के भी। इस फ़िक़रे में दोनों मअ्ना मुस्तअ्मल हैं। जहाँ पहली मर्तबा 'मौलाया' से मुराद 'मेरे आक़ा' है वहीं दूसरी 'अना मौलाक' का मतलब है मैं आप का ग़ुलाम हूँ। बहर कैफ़, दूसरा लफ़्ज़ आरिफ़, मअरेफ़त-ओ-इरफ़ान का इस्म फ़ाएल है और क्यूंकि इस लफ़्ज़ (यअ्नी मअ्रेफ़त) पर भी काफ़ी गुफ़्तगू हो चुकी है इस लिए इस से भी यहाँ क़रीना करते हैं। अलबत्ता इख़्तेसार की बेना पर अब बचे दो लफ़्ज़ ऊला और उख़रा। येह दोनों लफ़्ज़ बर वज़्न फूला हैं और अ़रबी ग्रामर में इस्म तफ़्ज़ील के मोअन्नस के सीग़े हैं। ऊला का मतलब है आग़ाज़, पहली, अगली और अव्वल का मोअन्नस है। क़ुरआने मजीद में जहाँ आख़ेरत के मुक़ाबेले में इसका इस्तेअ्माल हुआ है वहाँ इससे आलमे दुनिया मुराद है। क्यूंकि वोह आख़ेरत से पहले है। मसलन वल आख़ेरतो ख़ैरुल्लका मिनल ऊला। और आख़ेरत आप सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही के लिए ऊला से बेहतर है। इसी तरह उख़रा से मुराद है दूसरी, पिछली और आख़िर और आख़िर दोनों की मोअन्नस उख़रा, आती। लेहाज़ा क़ुरआने करीम में बीस (२०) मर्तबा से ज़्यादा इस्तेअ्माल किया गया है।

मुमकिन है यहाँ ऊला से मुराद ज़हूर से पहले का ज़माना मुराद हो और उख़रा से ज़हूर के बअ्द, यअ्नी इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की आ़लमी हुकूमत का दौर। इसकी ताईद उसूले काफ़ी की हदीस से की जा सकती है जहाँ **'व मा लहू फ़िल् आख़ेरते मिन नसीबे'** (सूरए शूरा, आयत २०) **और उसके लिए आख़ेरत का कोई हिस्सा नहीं है** की तफ़सीर में इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

लैसा लहू फ़ी दौलतिल्हक़्क़े मअ़ल क़ाएमे नसीबुन

क़ाएम (आले मोहम्मद) की हुकूमते बरहक़ में उसे कोई हिस्सा नसीब नहीं होगा।

(अल-काफ़ी, जिल्द १, सफ़हा ४३५)

इसी तरह इसकी तौज़ीह रजअ़त और क़यामत से भी की जा सकती है। ख़ुलासए कलाम येह है कि यहां ज़ियारत पढ़ने वाला अपने आक़ा-ओ-मौला, हज़रत बक़ीयतुल्लाहिल अअ़्ज़म अ़लैहिस्सलाम से ख़ेताब करते हुए अपनी ग़ुलामी और नौकरी का एक़रार करता है और साथ साथ येह भी दअ़्वा कर रहा है कि मौला मैं आप की मअ्रेफ़त वैसे ही रखता हूँ जो मअ्रेफ़त का हक़ है। आप के तमाम अन्हा-ओ-जेहात से वाक़िफ़ हूँ। वल्लाह अअ़्लम।

अतक़र्रबो इलल्लाहे तआ़ला बेका व बेआलेबैतेका

मैं अल्लाह तआ़ला से क़ुर्बत हासिल करता हूँ आप के ज़रीए और आप के आलेबैत अ़लैहिमुस्सलाम के ज़रीए।

यहाँ अल्लाह तआ़ला से तक़र्रुब का ज़रीआ अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम को क़रार दिया गया है। यअ्नी अगर कोई इन्सान ज़ाते हक़ से क़रीब होना चाहता है, तो उसके लिए लाज़िम है कि वोह उन ज़वाते मुक़द्देसा को वसीला और ज़रीआ़ बनाए

जिन्हें ख़ुद ख़ुदावंद मुतआल ने अपनी रसाई तक का ज़रीआ क़रार दिया है। क्यूंकि आज मुसलमानों के दरमियान कुछ ऐसे अफ़राद पैदा हो गए हैं जो वसीला, शफ़ाअत, तवस्सुल, ज़ियारते क़ुबूर, वग़ैरह का इन्कार करते हैं और उनकी तब्लीग़ात इतना ज़ोर पकड़ रही हैं कि कुछ अपने लोग भी उनके ख़ेयालात और अफ़कार से मुतास्सिर हो रहे हैं। इसलिए हम अपना फ़र्ज़ समझते हैं कि इस मौज़ूअ् पर कुछ रोशनी डालें ताकि साहेबाने ईमान के दिलों को तक़वियत पहुंचे और अह्ले नेफ़ाक़ के लिए ज़र्बकारी हो, इन्शाअल्लाह। पहले लफ़्ज़े अतक़र्रबो, पर मुख़्तसर गुफ़्तगू करते हैं। अतक़र्रबो क़रोबा के मादे से माख़ूज़ हुआ है और बाबे तफ़अ्उल का तेरहवाँ सीग़ा है। यूँ तो बाबे तफ़अ्उल के कई मअ्ना होते हैं लेकिन इस का सब से पहला मअ्ना है मुतावेअह यानी क़ुबूले असरे फ़ेअ्ल। लफ़्ज़े अतक़र्रबो मैं ने वसीले के ज़रीए ख़ुदा से क़ुर्बत की राह एख़्तेयार की मुतक़र्रिबा उस शख़्स को कहते हैं जो क़ुर्बत की जुस्तुजू कर रहा हो। इस ज़ियारत में ख़ुदा से क़ुर्बत हासिल करने की बात है मगर आले मोहम्मद अलैहिमुस्सलाम के वसीले से। अब आइये वसीले के मुतअ्ल्लिक़ चंद बातें हो जाएं। अलबत्ता इख़्तेसार को मद्दे नज़र रखते हुए। (वर्ना इस मौज़ूअ् के लिए तो एक मुस्तक़िल किताब दरकार है।)

फ़स्ले अव्वल

वसीला, सुन्नते इलाही

हर मुसलमान बिला रैब येह अक़ीदा रखता है कि ज़ाते बारिए हक़ क़ादिर, समद (बे नियाज़) और सुल्तान है। दूसरे लफ़्ज़ों में ख़ुदावंद मुतआल वोह बादशाह है जो हर शै पर क़ुदरत रखता है और अपने कामों में किसी का मोहताज नहीं। कोई उसका शरीक नहीं और तमाम मौजूदात उसकी मख़्लूक़ और मसनूअ् है। बेदूने इस्तेस्ना, अगर कोई इस से हट कर अक़ीदा रखे वोह इस्लाम के दाएरे से ख़ारिज है।

इन सेफ़ाते कमालिया के बावजूद, ख़ुदावंद मुतआल ने अपने तमाम कामों में वसीला क़रार दिया है। उन वसीलों के ज़रीए वोह कामों को अंजाम देता है। दुनिया की कोई ताक़त ऐसी नहीं है जो क़ादिर मुत्लक़ के उन उमूर को बराहेरास्त अंजाम देने से रोक सकती है। लेकिन आलिमे बेकुल्ले शै की मशीयत ने येह फ़ैसला किया कि वोह तमाम कामों को वसाएल के ज़रीए अंजाम देगी। लेहाज़ा मलाएका मुक़र्रबीन अंबिया-ओ-मुरसलीन और औसियाए केराम का इन्तेख़ाब किया उन उमूर को अंजाम देने के लिए। येह वोह हक़ीक़त है कि जिस का कोई इन्कार कर ही नहीं सकता। मसलन क्या कोई मुसलमान इन्कार कर सकता है कि ख़ुदावंद मुतआल ने अंबिया और मुरसलीन को लोगों की हेदायत के लिए भेजा या नुज़ूले वही के लिए हज़रत जिबरईल को वसीला क़रार दिया? या क़ब्ज़े अरवाह की ज़िम्मेदारी हज़रत इज़्राईल को सौंपी? या नफ़्ख़ए सूर का ओह्दा हज़रत इस्राफ़ील का है? क्या येह तमाम उमूर वोह ख़ुद नहीं कर सकता है? यक़ीनन वोह कर सकता है लेकिन उसने तवस्सुल को अपनी सुन्नत क़रार दिया। शायद उन नाम नेहाद मुसलमानों को येह बताने के लिए कि तुम इतने मुतकब्बिर और मग़रूर हो गए कि येह गुमान करने लगे कि तुम मुझ तक बराहे रास्त पहुंच जाओगे? जबकि मैंने ख़ुद तुम्हें हुक्मे तवस्सुल दिया है:

या अय्योहल्लज़ीना आमनुत्तकुल्लाहा वब्तगू इलैहिल वसीलता व जाहेदू फ़ी सबीलेही लअ़ल्लकुम तुफ़्लेहून।
ऐ साहेबाने ईमान! अल्लाह से डरो, उसके लिए वसीला तलाश करो और उसकी राह में जद्दो जेहद करो ताकि तुम कामियाब-ओ-कामरान हो।

(सूरए माएदा, आयत ३५)

फ़स्ल दुव्वुम

तवस्सुल क़ुरआन करीम की रोशनी में

क़ुरआने करीम की मुन्दरजा बाला आयत के अ़लावा, किताबे मुबीन में मुतअद्दिद आयतें ऐसी हैं जिन में मफ़हूमे तवस्सुल बतौर सरीह बयान किया गया है। मसलन, हज़रत यअ़क़ूब (अ़ला नबीयेना व आलेही व अ़लैहिस्सलाम) के बेटे जब आप के पास आए और आप से अपने लिए इस्तेग़फ़ार करने की दरख़्वास्त की यअ़नी अपने लिए हज़रत यअ़क़ूब अलैहिस्सलाम को अपना वसीला क़रार दिया तो आप ने इन्कार नहीं किया बल्कि फ़ौरन क़ुबूल कर लिया। आइए ख़ुद क़ुरआने करीम की ज़बानी मुलाहेज़ा फ़रमाएं:

क़ालू या अबानस्तग़फ़िर् लना ज़ुनूबना इन्ना कुन्ना ख़ातेईन। क़ाला सौफ़ा अस्तग़फ़ेरो लकुम रब्बी इन्नहू होवल ग़फ़ूरुर्रहीम।

बरादराने यूसुफ़ ने कहा बाबा आप हमारे गुनाहों के लिए इस्तेग़फ़ार (यअ़्नी तलबे मग़फ़ेरत करिये) यक़ीनन हम ख़ताकार हैं। आपने कहा अ़नक़रीब मैं अपने परवरदिगार से तुम्हारे लिए तलबे मग़फ़ेरत करूँगा, बेशक वोह मआ़फ़ करने वाला और रहीम है।

(सूरए यूसुफ़, आयात ९७-९८)

आपने ग़ौर फ़रमाया कि पैग़ंबरे ख़ुदा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही ने येह नहीं कहा कि वसीला बिदअ़त है, हराम है, बिला वास्ता इस्तेग़फ़ार करो, नहीं बल्कि इसके बरअ़क्स आप ने उनकी सिफ़ारिश क़ुबूल फ़रमाई और ख़ुदावंद करीम की मग़फ़ेरत-ओ-रहमत की उम्मीद दिलाई। अ़लावा अज़ईन, क़ुरआने करीम में कई मिसालें हैं लेकिन मज़मून के हुदूद को ज़ेरे नज़र रखते हुए हम एक ही पर इक्तेफ़ा करते हैं।

फ़स्ल सेव्वुम

तवस्सुल अह्ले सुन्नत वल जमाअ़त की मोअ़्तबर हदीसों में

पहली हदीस

उस्मान बिन हनीफ़ का बयान है एक ना बीना पैग़ंबर सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अ़र्ज़ की, आप ख़ुदा से दुआ फ़रमाएं कि मुझे आ़फ़ियत अ़ता करे। आप (स.अ़.) ने जवाब में फ़रमाया:

अगर तू कहे तो दुआ करूं और अगर तू चाहे तो सब्र करे और सब्र तेरे हक़ में बेहतर है। उसने कहा: आप दुआ करिये। पैग़ंबर सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही ने उसे वुज़ू करने का हुक्म दिया कि तू वुज़ू कर और अपने वुज़ू पर ख़ूब तवज्जोह दे। दो रकअ़त नमाज़ अदा कर और येह दुआ पढ़ 'परवरदिगारा! मैं तुझ से दरख़ास्त करता हूं कि मैं तेरी तरफ़ मुतवज्जेह होता हूँ तेरे पैग़ंबर मोहम्मद सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही जो पैग़ंबरे रहमत हैं, ऐ मोहम्मद सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही मैं आप के तवस्सुत से अपने परवरदिगार की तरफ़ रुजूअ़ करता हूं कि आप सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही मेरी हाजत रवाई फ़रमाएं। ख़ुदाया, तू हुज़ूर की शफ़ाअ़त को मेरे हक़ में क़ुबूल फ़रमा।

इस हदीस की सेहत व इतक़ान के मुतअ़ल्लिक़ कोई शक की गुंजाइश नहीं। हत्ता कि वहाबियों के पेशवा इब्ने तैमिया ने इस हदीस को सहीह क़रार दिया है। मशहूर वहाबी मुसन्निफ़ 'रफ़ाई' जो हर वक़्त कोशिश करता रहता है कि तवस्सुल को ज़ईफ़ साबित करे। लिखता है:

ला शक्का अन्ना हाज़ल हदीसा सहीहुन व मशहूरुन व क़द सबता फ़ीहे बिला शक्किन

बेशक येह हदीस सहीह और मशहूर है और बग़ैर किसी शुब्हा इसकी हक़्क़ानियत साबित है।

(अत्तवस्सुल, इला हक़ीक़तुत्तवस्सुल, सफ़हा १५८)

इस हदीस को निसाई ने अपनी सुनन में, बेहक़ी ने अपनी सुनन में, तबरानी ने अपनी मोअ़्जम में, तिरमिज़ी ने अपनी सुनन में और हाकिम नेशापूरी ने अपनी मुस्तदरकु स्सहीहैन में नक़्ल किया है।

(अत्तवस्सुल)

इसके अ़लावा ज़ीनी दहलान अपनी किताब ख़ुलासतुल कलाम में लिखता है 'इस हदीस को बुख़ारी ने अपनी तारीख़ में, इब्ने माजा ने अपनी सुनन में, हाकिम नेशापूरी ने मुस्तदरकुस्सहीहैन में और जलालउद्दीन सुयूती ने जामेअ़् में नक़्ल किया है।

इब्ने माजा ने इस हदीस को सहीह क़रार दिया है। हाकिम नेशापूरी लिखते हैं 'येह हदीस शेख़ैन (बुख़ारी और मुस्लिम) की शर्तों पर सादिक़ आती है लेकिन उन दोनों ने इसे नक़्ल नहीं किया है।

दूसरी हदीस

पैग़ंबरे अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही ने फ़रमाया:

जब (जनाब) आदम से तर्के औला हुआ, आपने सर को आसमान की तरफ़ बलंद किया और कहा (ख़ुदाया) मैं बेहक़्क़े मोहम्मद तुझ से सवाल करता हूँ कि तू मुझे बख़्श दे। ख़ुदा ने सवाल किया

'मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही कौन हैं?' आदम ने जवाब दिया, जब तूने मुझे पैदा किया था मैंने अपना सर अर्श की तरफ़ उठाया और देखा कि उस पर लिखा हुआ है, ख़ुदा के अलावा कोई मअ्बूद नहीं और मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही ख़ुदा के पैग़ंबर हैं। मैं ने ख़ुद से कहा कि मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही ख़ुदा के पैग़ंबर हैं। मैंने ख़ुद से कहा कि मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही ख़ुदा की बुज़ुर्गतरीन मख़्लूक़ हैं कि ख़ुदा ने अपने नाम के साथ आप सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही के नाम को रखा है, उस वक़्त आदम पर वही हुई कि आप सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही तेरी ज़ुर्रियत से आख़री नबी होंगे। और आप सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही न होते, तो हम तुझे ख़ल्क़ ही न करते।

(तबरानी, अल-मोअ्जमुस्सग़ीर में; हाकिम नेशापूरी, मुस्तदरकुस्सहीहैन जि. २, स. ६१५ में, अबू नईम इस्फ़हानी और बेहक़ी दलाएलुन्नबूवत में, इब्ने असाकिर शामी अपनी तारीख में, सुयूती अददुर्रुल मन्सूर जि. १, स. ५९ में और आलूसी ने रूहुल मआनी, जि. १, स. २१७ में इस हदीस को नक़्ल किया है।)

फ़स्ल चहारुम

तवस्सुल शीआ हदीसों में

शीआ कुतुबे अहादीस में तवस्सुल का मफ़हूम बकसरत बयान किया गया है। यहाँ तमाम हवालाजात का तहरीर करना भी मुमकिन नहीं लेकिन मिसाल के लिए एक हवाला पेश करते हैं। बेहारुल अनवार, जि. २३, स. ९९ बाब अन्नहुम अलैहिस्सलाम अल वसाएल बैनलख़ल्क़े व बैनल्लाह (यअ्नी अह्ले बैत अलैहिमुस्सलाम मख़्लूक़ात और अल्लाह के दरमियान वसीला है)।

वन्तज़ेरो ज़ोहूरका व ज़ोहूरलहक़्क़े अला यदैक

मैं आप के ज़हूर और आप के हाथों पर हक़ के ज़हूर का इन्तेज़ार कर रहा हूँ।

इन्तेज़ार और ज़हूर दोनों मौज़ूअ् पर असोसिएशन ऑफ़ इमाम महदी (अज.) की जानिब से काफ़ी किताबें और किताब्चे शाएअ् हो चुके हैं। अल मुन्तज़र के ख़ुसूसी शुमारों में भी इस पर काफ़ी गुफ़्तगू हो चुकी है। जिन्हें मज़ीद इत्तेला का शौक़ है वोह रुजूअ् कर सकते हैं।

व अस्अलुल्लाहा अँय्योसल्लेया अला मोहम्मदिन व आले मोहम्मद व अँय्यज्अलनी मिनल मुन्तज़ेरीन लका वत्ताबेईन वन्नासेरीना लका अला अअ्दाएका वलमुस्तश्हदीना बैना यदैका फ़ी जुम्लते औलियाएक

मैं अल्लाह से सवाल करता हूँ कि वो मोहम्मद व आले मोहम्मद पर दुरूद भेजे और मुझे आप के इन्तेज़ार करने वालों में क़रार दे, आप की इत्तेबाअ् करने वालों में, आप के दुश्मनों के ख़ेलाफ़ आप की मदद करने वालों में और आप के जुम्ला दोस्तों में आप के हुज़ूर में फ़ैज़े शहादत हासिल करने वालों में।

ज़ियारत के इस फ़िक़रे में इमामे ज़माना अज्जलल्लाहो तआला के चाहने वालों की तीन ज़िम्मेदारियाँ और एक जाएज़े का ज़िक्र है। वोह तीन ज़िम्मेदारियाँ हैं: इन्तेज़ार, इत्तेबाअ् और नुसरत और उनका जाएज़ा या इन्आम शहादत है। किसी भी मोमिन के लिए इस से बढ़ कर और सआदत नहीं हो सकती कि वोह अपने इमाम की नुसरत करते करते फ़ैज़े शहादत हासिल करे।

(बक़िया आइन्दा इन्शाअल्लाह)

सफ़हा न. ३३ का बाक़ी

लिए तक़रीबन २५६ आयतों का एक गुलदस्ता है। और सीरते नबवी की तबलीग़ के हर मोड़ पर आप का ज़िक्र है। हत्ता मुरसले अअ्ज़म (स.अ.) ने अपने आख़री हज की वापसी में ग़दीरे ख़ुम में जहाँ अमीरुल मोमेनीन अली इब्ने अबी तालिब अलैहिस्सलाम के सर पर ताजे वेलायत-ओ-जॉनशीनी रखा वहीं अपने बारह जॉनशीनों का एअ्लान भी किया और आख़री जॉनशीन की अलामतों का भी एअ्लान किया। उसका नाम मेरा नाम होगा। उसकी कुन्नियत मेरी कुन्नियत होगी क़िस्त-ओ-अद्ल का उजाला होगा। ज़ुल्म-ओ-जौर की तारीकी छट जाएगी।

अल्लाह उस मुन्तज़र की जल्वागाह की झलक दिखा दे जिस के लिए क़दीम तरीन अक़्वाम के मुन्तज़ेरीन से लेकर अह्द ब अह्द एक कारवाने ख़ुश आइंद मुस्तक़बिल की तरफ़ बढ़ रहा है और हमें उस में शामिल फ़रमा। आमीन।

बेहारुल अनवार पर एक नज़र

मुक़द्दमा

अइम्मए मअ्सूमीन अलैहिमुस्सलाम दुनयवी, दीनी और उ़लूमे इलाहिया के सरचश्मे हैं और जिन की सीरत और अक़वाल हमारे लिए नजात का ज़रीआ हैं जिन का इत्तेबाअ् और पैरवी हम पर वाजिब है हमें उसके हुसूल के लिए बहुत ज़्यादा ताकीद की गई है। और अगर हम ने हुसूल दुनिया के लिए तअ्लीमाते अइम्मा को यकलख़्त फ़रामोश कर दिया तो नजाते उख़रवी बरतरफ़ इस दुनिया ही में उन गुमराह लोगों में होंगे और ख़सरतुद्दुनिया के भी मिस्दाक़ होंगे।

हमारे उलमाए केराम, मुतक़द्देमीन से ले कर आज तक, ने अपनी मेहनत, मशक़्क़त, ईसार, क़ुर्बानी के साथ वोह बे लौस इल्मी ख़िदमात अंजाम दी हैं और इतना अ़ज़ीम इल्मी ज़ख़ीरा हमारे लिए मुहय्या कर दिया है जिसके लिए क़ौम का हर बच्चा, हर फ़र्द मरहूने मिन्नत है। यही ज़ख़ीरा क़ौम की पूंजी है और यही हमारी बक़ा की ज़मानत है यही ज़ादे आख़ेरत है। यही ज़रीअए नजात है। यही शफ़ाअत का हक़ है इसी मैदान में सरगर्मे अ़मल होना अज्र का इस्तेहक़ाक़ है। जब इल्म के चिराग़ की वोह लौ तेज़ होने लगी जिसे अइम्मए मअ्सूमीन ने रोशन किया तो दुश्मनों के दिल जल उठे। और येह मक्र-ओ-फ़रेब का असलहा साहेबाने नुकरा ने इस्तेअ्माल किया कि जो सफ़े अव्वल के आ़लिम हैं उनकी दयानत दारी। नाबेग़ा आ़लिमों की ज़रफ़ियत पर ख़ुद साख़्ता मन्फ़ी पहलू निकाले जाएं। उसे उन्हीं की क़ौम में चर्चे और बह्स के लुक़मा दे कर उनके ख़ेलाफ़ आशुफ़्ता मिज़ाजी पैदा कर दी जाए।

ऐसा सब कुछ अ़ल्लामा बाक़िर मजलिसी (र.अ.) जिन की मुहय्यरुल उ़क़ूल ख़िदमात बेहारुल अनवार की ११० ज़ख़ीम जिल्दों और दीगर ३० किताबों में आप की शख़्सियत को ता सुब्हे क़यामत ज़िंदा रखेंगी के साथ हो और बिल्ख़ुसूस किताब बेहारुल अनवार के सिलसिले में अगर अ़क़ीदत मंदों, जूयाने इल्म और मोहक़्क़ीन की नज़रों में इस किताब की जामेईयत और हमागीरियत को हल्का कर दें तो येह लोग असनाद व बयान में ख़ुद ही उलझ जाएंगे।

कुछ बातें मोअ़्तरेज़ीन की: एक बात कुछ उ़लमा और कुछ इल्म की तरफ़ मुतवज्जेह वोह अफ़राद जो ज़ाहिरी एअ़्तेबार से उ़लमा की सफ़ में नहीं आते हैं, के दरमियान गश्त कर रही है कि किताब (बेहारुल अनवार) एक ऐसी किताब है जिस में अ़ल्लामा मौसूफ़ ने मुसद्देक़ा और ग़ैर मुसद्देक़ा, मोअ़्तबर और ग़ैर मोअ़्तबर तमाम अहादीस और रवायात को जम्अ़ कर दिया है। फटकना और पछोड़ना और कंकर पत्थर अलग करके साफ़ करने का काम आने वाले उ़लमा और जूयाने इल्म के लिए छोड़ दिया है।

दूसरी बात जो अह्ले इल्म के दरमियान गश्त कर रही है वोह येह कि किताब बेहारुल अनवार एक मज्मूअए अहादीस व रवायत है। तारीख़ और इल्मे दीन के क़बील की बातों का है जिसको अ़ल्लामा मजलिसी के शागिर्दों ने जम्अ़ किया और तरतीब दी और जब वोह किताब की जिल्दों की शक्ल में सामने आ गई तो अ़ल्लामा मजलिसी ने उसे अपना नाम देकर छपवा दिया या शाएअ् कराया।

हमारी असोसीएशन के एक बरादरे अ़ज़ीज़ जो तहक़ीक़ के मैदान के होनहार तालिबे इल्म हैं ऐसे मबाहिस की तरफ़ मुतवज्जेह हुए और उन्होंने अ़ल्लामा मौसूफ़ की शख़्सियत, ख़िदमात, मोहय्यरुल उ़क़ूल कारनामों और आप के महज़र के अ़लावा दूसरे उ़लमाए केबार के नज़रियात का एक मुख़्तसर सा जाएज़ा लेते हुए इस तरह रक़मतराज़ हैं।

बेहारुल अनवार और इस अ़ज़ीमुश्शान किताब के मोअल्लिफ़ मरहूम मोहम्मद बाक़िर मजलिसी (रह.) दुनियाए तशय्योअ् में किसी तआरुफ़ के मोहताज नहीं हैं। अ़ल्लामा मजलिसी की किताब के तरजुमे उर्दू, फ़ारसी और अ़रबी में मुसलसल शाएअ् होते रहते हैं।

अ़ल्लामा मजलिसी के वालिद ख़ुद भी अ़ल्लामा ही के लक़ब से याद किये जाते हैं इस लिए कि वोह अ़ल्लामा थे। आप का इस्मे गेरामी अ़ल्लामा मोहम्मद तक़ी इब्ने मक़सूद अ़ली था। यही नहीं बल्कि आप अ़ल्लामा मजलिसी अव्वल के नाम से ज़िक्र-ओ-बयान में आते हैं।

अ़ल्लामा मोहम्मद बाक़िर मजलिसी (रह.) इस्फ़हान में १०३७ में मुतवल्लिद हुए। और २७ रमज़ानुल मुबारक १११० हि. में वफ़ात पाई। आप इस्फ़हान के जामेअ् मस्जिद में दफ़्न हुए। उस ज़माने से ले कर आज तक आपके मज़ार पर ज़ाएरीन की आमद-ओ-रफ़्त लगी रहती है। (तबअ् जदीद आप की वफ़ात ११११ हि. लिखी है जो सहीह नहीं है) अ़ल्लमा मौसूफ़ की हौज़ए इल्मिया सारे ईरान में अ़अ्ला सत्ह के इल्मी मराकिज़ में ऐसा मरकज़ था जिस ने अपनी ऐसी पहचान बनाई है जिसके असरात व बरकात ता सुब्हे क़यामत बाक़ी रहेंगे। आप ही के हौज़ा-ए-इल्मिया से मुल्ला सालेह माज़न्दरानी और मोहक़्क़िक़ आमेना ख़ातून जैसी जलील क़द्र हस्तियाँ पैदा हुईं जिन के ज़रीए मराजेअ् केराम का सिलसिला चला है। येह वोह ज़माना है जब रूस और बरतानिया में ईरान के इल्मी उ़रूज और यकजहती के ख़ेलाफ़ साज़िशों ने जनम लेना शुरू कर दिया था। अ़ली मोहम्मद बाब के फ़ित्ने की आहटें सुनाई दे रही थीं और प्रिंस दालगूरकी ईरान में बाब के ज़रीए दाख़िल होने के लिए आमादा हो चुका था। इन तमाम हालात से मरकज़े इल्म बाख़बर था और एक देफ़ाई क़िल्आ (क़िला) था।

ख़िदमात

चुनाँचे अ़ल्लामा मजलिसी ने बेहारुल अनवार में कुतुबे अरबआ, मनला यहज़रहुल फ़क़ीह, उसूले काफ़ी, इस्तेबसार और तहज़ीब के अ़लावा दीगर मोअ्तबर किताबों से हदीस जम्अ करने का काम किया। ये कुतुबे अरबआ वोह चार सुतून हैं जिन पर पूरी शीअ़त का दार-ओ-मदार है।

अ़ल्लामा मौसूफ़ ने इस्लामी तारीख़ी इन्क़ेलाबात का शायद ही कोई ऐसा पहलू दरगुज़र किया हो जिन की हक़ाएक़ की रोशनी में सेहाह ने जिन से पहलू तही की हो उसका भर पूर जवाब न दिया हो।

क़दीम बेहारुल अनवार २५ जिल्दों पर मुश्तमिल है। और हर जिल्द की ज़खामत है जिन की बेना पर इन जिल्दों को जब मुन्क़सिम किया गया तो ११० जिल्दों में शाएअ् हुईं। हमारे उ़लमा जो तहक़ीक़ में सर गर्मे अ़मल हैं उनके लिए येह किताब बेहारुल अनवार एक ताक़तवर इल्मी असलहा है।

आप की २५ ज़ख़ीम जिल्दों में अ़ल्लामा मौसूफ़ ने सत्रह जिल्दों में बयान और तौज़ीह के उनवान से रवायतों की तशरीह ख़ुद ब नफ़्से नफ़ीस फ़रमाई है। और बाक़ी ८ जिल्दों में आप को बयान और तौज़ीह का मौक़ा नहीं मिला जिस के लिए आप ने अपने शागिर्द मीर मोहम्मद हुसैन ख़ुल्दाबादी को वसीयत फ़रमाई की वोह तौज़ीह और बयान लिखें उनकी किताबों की फ़ारसी आसान, दुन्यवी उख़रवी फ़ाएदों से माला माल है। इन किताबों के उर्दू तरजुमे दस्तयाब हैं।

तालीफ़ाते अ़ल्लामा मजलिसी

अल्लाह तअ़ाला ने आप को ग़ैर मअ्मूली तौफ़ीक़ात से नवाज़ा था। मोहय्यरुल उ़क़ूल हाफ़ेज़े के मालिक थे और इल्म दोस्ती का एक अ़जब कैफ़ उनकी शख़्सियत में पाया जाता है। अ़ल्लामा मौसूफ़ की लगन और तुन्देही ने जो इल्मी ख़ज़ाना किताबी शक्लों में छोड़ा है वोह येह हैं।

(१) बेहारुल अनवार २५ ज़ख़ीम जिल्दों पर मुश्तमिल है जो अब ११० जिल्दों में शाएअ् हो रही हैं।
(२) ह़यातुल क़ुलूब तीन जिल्दों में है।

दूसरी किताबें

(३) हक़्क़ुल यक़ीन।
(४) ह़िलयतुल मुत्तक़ीन
(५) ऐ़नुल ह़यात
(६) जलाउल उ़यून
(७) तौहीदे मुफ़ज़्ज़ल
(८) जवाबहाए मसाएले मुतफ़र्रेक़ा
(९) तज़केरतुल अइम्मा

और इस तरह बे शुमार किताबें हैं जो मसाएल के हल के सिलसिले में मौजूद हैं।

आप की तमाम तालीफ़ात जो ५८ किताबों पर मुश्तमिल है एक मुहासेबा है वर्ना इसके अ़लावा भी आप ने बहुत कुछ लिखा है इन तमाम किताबों में बेहारुल अनवार दाएरतुल मअ़ारिफ़ (इन्साइक्लोपीडिया) की हैसियत रखती है।

बुज़ुर्गतरीन उ़लमा की नज़र में अ़ल्लामा मजलिसी: वोह उ़लमाए बुज़ुर्ग जिन पर शीईयत जितना फ़ख़्र करे कम है। और उनका नाम ज़बान पर आते ही बड़े बड़े उ़लमा तअ़्ज़ीम से सर झुका लेते हैं मरहूम मिर्ज़ा हुसैन नूरी, अ़ल्लामा वहीद बहबहानी, उस्तादे अअ़्ज़म हाज शेख़ मुर्तज़ा अन्सारी ने अपनी तहरीरों में अ़ल्लामा मोहम्मद बाक़िर मजलिसी को फ़क़त अ़ल्लामा के ख़ेताब से ही नहीं याद किया है बल्कि मौसूफ़ की इल्मी हैसियत, अ़ज़मत और ख़िदमात आ़लिया को बहुत सराहा है और बड़ी क़द्र की निगाह से देखा है और एक अ़ज़ीम मोहक़्क़िक़ सिराजुल इल्म और नाबेग़ा तसलीम किया है।

ये हक़ीक़त बड़ी हद तक रोशनी दे रही है कि अ़ल्लामा मौसूफ़ सरचश्मए उ़लूमे इलाहिया और जो वरसादारे तब्लीग़ाते अंबियाए मासबक़ हैं यअ़्नी आप हमारे इमामे अ़स्र अ़लैहिस्सलाम के दर से बहुत नज़दीक़ थे वर्ना इतना बड़ा इल्मी ज़ख़ीरा तालिबाने इल्म के लिए जितना अ़ल्लामा मजलिसी ने अपने बअ़्द छोड़ा है एक अम्र मोहाल होता येह ज़रूर है कि छान बीन के बअ़्द इसका पता चला है कि आप ने तरतीब और जम्अ़ करने में अपने शागिर्दों से ज़रूर मदद ली होगी।

इतना बड़ा तआ़रुफ़ अ़ल्लामा मोहम्मद बाक़िर मजलिसी का इस जरीदे के लिए बावजूद सफ़हात की कमी के हम ने मुनासिब समझा कि हमारी क़ौम दो जानिब से आगाह हो जाए, एक तो अपने उस आ़लिम की मअ़्रेफ़त हासिल कर ले जिस ने मुआनेदीन की खोखली बहसों की क़लई उतार दी हो और जूयाने इल्म और अह्ले क़लम की तसनीफ़ात की तरफ़ मुतवज्जेह हों और अ़ल्लामा मौसूफ़ के ख़ेलाफ़ हल्की गुफ़्तुगू से बाज़ रहें।

दूसरा मक़सद येह कि अ़ल्लामा मौसूफ़ की बेहारुल अनवार २५ ज़ख़ीम जिल्दों पर मुश्तमिल है जिन में से तेरहवीं ज़ख़ीम जिल्द हज़रत हुज्जत इब्निल हसन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम के बारे में है।

अफ़सोस है कि येह जिल्द मख़्सूस उ़लमा और मख़्सूस कुतुब ख़ानों में ही दस्तयाब हैं हाँ येह ज़रूर है कि बअ़्द की इशाअ़तों में जब बेहारुल अनवार एक सौ दस जिल्दों में तक़सीम हुई तो तेरहवीं जिल्द तीन जिल्दों में तक़सीम हुई जिल्द ५१, जिल्द ५२ और जिल्द ५३, येह तीनों जिल्दें इमामे ज़माना के बारे में हैं।

राक़िमुल हुरूफ़ ने इस मज़मून की तहरीर में अल मकतबतुल इस्लामिया तेहरान से शाएअ् होने वाली जिल्दों से इस्तेफ़ादा किया है तीनों जिल्दों के मजमूई सफ़हात १११८ हैं।

इन्शाअल्लाह हम ५१ वीं, ५२वीं और ५३ वीं जिल्द के बारे में नेहायत इख़्तेसार के साथ एक तआ़रुफ़ी ख़ुलासा तहरीर करने की सआ़दत हासिल करेंगे।

इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम और बेहारुल अनवार की जिल्द ५१, ५२, ५३

इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के बारे में जो तफ़सीली और असनादी मअ़्लूमात का ख़ज़ाना आप ने बेहारुल अनवार में मुहय्या फ़रमाया है उसका एक जुज़वी मुहासेबा क़ारेईन के लिए हाज़िर है।

बाब १

इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की वेलादत और आप अ़लैहिस्सलाम की वालेदा के हालात नक़्ल हुए हैं शेख़ कुलैनी (रह.) की किताब अल-काफ़ी से नक़्ल किया है। आप की वेलादत पंद्रहवीं शअ़्बान २५५ हि. में हुई। शेख़ सुदूक़ की किताब कमालुद्दीन के हवाले से लिखा है कि जब जनाबे नरजिस ख़ातून ह़ामेला हुईं तो इमाम ह़सन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम ने उनसे फ़रमाया कि तुम से एक बेटा होगा उसका नाम मोहम्मद होगा और वोह मेरे बअ़्द मेरा

जानशीन होगा। और उसके बअ्द की हदीस में जनाबे हकीमा ख़ातून बिन्ते इमाम मोहम्मद तक़ी अ़लैहिस्सलाम जो कि इमाम हसन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम की फुफी थीं और इमाम ज़माना अ़लैहिस्सलाम की वेलादत के मौक़ा पर नरजिस ख़ातून के साथ थीं, के वाक़ेआ को नक़्ल किया है और फिर वोह तमाम रवायतें जिस में इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम का अ़क़ीक़ा और इमाम हसन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम का अपने मख़्सूस असहाब को अपने इस बच्चे को दिखाना और उनको बताना कि येह मेरा जानशीन है नक़्ल की हैं।

बाब २

इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के अस्माअ् व अल्क़ाब और कुन्नियत और उनकी वज्हे तसमिया का तज़केरा है सब से पहले लक़ब क़ाएम के बारे में इमाम बाक़िर अ़लैहिस्सलाम से नक़्ल की है जिस का ख़ुलासा येह है कि अगर्चे तमाम अइम्मा क़ाएम बहक़्क़ हैं लेकिन येह लक़ब मख़्सूस इमामे ज़माना के लिए इस वजह से है कि आप इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम के ख़ून के इन्तेक़ाम के लिए क़याम फ़रमाएंगे।

आप को महदी इस लिए कहते हैं कि ख़ुदावंद आ़लम ने आप को अम्रे हक़ीक़ी की हेदायत की है। आप हक़ीक़ी तौरात और दूसरी आसमानी किताबों को बाहर लाएंगे और फिर तौरात की पैरवी करने वालों पर तौरात के अहकाम और अह्ले इन्जील पर इन्जील से और अह्ले ज़बूर पर ज़बूर के ज़रीए और मुसलमानों पर कुरआन के मुताबिक़ हुकूमत करेंगे।

अ़ल्लामा मजलिसी इस हदीस के ज़ैल में फ़रमाते हैं कि अह्ले तौरात से तौरात के ज़रीए हुक्म करेंगे इस में कोई तज़ाद नहीं है उस हदीस से कि जिस में बयान हुआ है सिर्फ़ लोगों से दीने इस्लाम को क़बूल किया जाएगा क्यूंकि यहाँ राज़ येह है कि उनकी किताबों के ज़रीए दलील क़ाएम करेंगे।

बाब ३

हज़रत का नाम कहाँ, कैसे लिया जाए और कहाँ न लिया जाए।

बाब ४

आप अ़लैहिस्सलाम की सिफ़तें, अ़लामतें और आप का नसबे आ़ली मसलन आप की पोशीदा वेलादत, अमीरुल मोमेनीन अ़लैहिस्सलाम के ख़ानदान, आख़री ज़माने में ज़हूर, मुतवस्सितुल क़ामा जवान होना, ग़ज़े कि येह आप का हुलिया और शमाएल और नसब मसलन इमाम रज़ा अ़लैहिस्सलाम या इमाम मोहम्मद बाक़िर अ़लैहिस्सलाम के बअ्द किस इमाम की औलाद में हैं।

बाब ५

उन आयतों का तज़केरा कि अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम ने अपनी रवायतों में इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम के ज़हूर की तावील की है यअ़्नी कुरआने मजीद में बहुत सी आयतें हैं जिस में ज़ाहिरी मअ़्ना से हट कर बातिनी मअ़्ना भी हैं और वोह इमाम के ज़हूर की तरफ़ इशारा करती हैं।

बाब ६

इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के बारे में शीआ और सुन्नी हवालों से ख़ुदा के ज़रीए और पैग़ंबर अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही के ज़रीए नक़्ल होने वाली हदीसें आई हैं। मसलन पैगंबर सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही का येह फ़रमाना कि हम औलादे अ़ब्दुल मुत्तलिब, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही, हमज़ा सय्यदुश्शोहदा, जअ़्फ़र तय्यार, अ़ली व फ़ातेमा अ़लैहिमस्सलाम हसन व हुसैन अ़लैहेमस्सलाम और महदी अ़लैहिस्सलाम सरदाराने जन्नत हैं।

बाब ७

इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के बारे में अमीरुल मोमेनीन अ़लैहिस्सलाम से नक़्ल होने वाली हदीसें हैं।

बाब ८ से बाब १५

इन अबवाब में इमाम हसन, इमाम हुसैन, इमाम ज़ैनुल आ़बेदीन, इमाम बाक़िर, इमाम सादिक़, इमाम काज़िम, इमाम रज़ा, इमाम जवाद, इमाम अ़ली नक़ी और इमाम हसन अ़सकरी अ़लैहिमुस्सलाम से इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम से वारिद होने वाली हदीसों का तज़केरा है।

बाब १६

इस बाब में काहिनों के ज़रीए नक़्ल होने वाली पेशीनगोइयाँ नक़्ल हुई हैं मसलन सुतैह नामी काहिन जो ईसाई था और अ़रब था। उरदुन के इलाक़े इशान से उसका तअ़ल्लुक़ था। उसने एक बादशाह ज़ाजदान के आइंदा के हालात पर इस्तेफ़सार के मौक़ेअ़् पर पेशीनगोइयाँ की हैं जो पढ़ने से तअ़ल्लुक़ रखती हैं।

बाब १७

शेख़ तूसी (रह.) की दलीलें इमाम ज़माना अ़लैहिस्सलाम की ग़ैबत और उनके वजूदे मुक़द्दस के बारे में है।

बाब १८

अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम की ग़ैबतों से इस्तेदलाल, ग़ैबते इमामे ज़माना पर।

बाब १९

बअ़्ज़ मोअ़म्मरीन के तज़केरे के ज़रीए मुख़ालेफ़ीने तूले उ़म्र को जवाब और उसके ज़रीए इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की तूलानी ग़ैबत और तूले उ़म्रे पर इस्तेदलाल। येह एक तूलानी बाब है और मरहूम अ़ल्लामा मजलिसी ने इस बाब में हमारे जय्यद उ़लमा जैसे शेख़ सदूक़ की किताब कमालुद्दीन से दसयों मोअ़म्मरीन अफ़राद का ज़िक्र किया है तूलानी उ़म्र को बईद जानने वालों के अ़क़ाएद को उन वाज़ेह मिसालों से रद किया है। इसी तरह मरहूम सय्यद मुर्तज़ा, अ़ल्लामा कराजकी और शेख़ मुफ़ीद रिज़वानुल्लाह अ़लैहिम ने अ़जीब-ओ-ग़रीब क़िस्म के मोअ़म्मरीन का तज़केरा किया है और साबित किया है कि तूले उ़म्र कोई नई चीज़ नहीं है।

बाब २०

कुछ मोअ़्जेज़ात जो वजूदे अक़दसे इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के ज़रीए ज़ाहिर हुए और हज़रत अ़लैहिस्सलाम के आ़ली मरतबत नाएबीन का तज़केरा है। तक़रीबन ४२ अफ़राद का ज़िक्र हुआ है। उन वाक़ेआ़त में इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम ने अपने चाहने वालों की रहनुमाई और मदद फ़रमाई है। बअ़्ज़ ऐसे हालात का इन्केशाफ़ किया है कि उसके मुन्कशिफ़ हो जाने के बअ़्द लोग हैरान रह गए।

बाब २१

ग़ैबते सुग़रा में नाएबीने ख़ास और उनके ज़रीए इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम और शीओं के दरमियान सफ़ारत का तज़केरा है। अबू उ़मर व उ़समान बिन सईद अ़म्री, अबू जअ़्फ़र मोहम्मद बिन उ़समान अ़म्री, अबुल क़ासिम हुसैन बिन रौह नोबख़्ती और अबुल हसन अ़ली बिन सैमुरी इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के नाएबे ख़ास थे। इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम ने उन नाएबीन के ज़रीए एक बेहतरीन निज़ाम क़ाएम किया जो ग़ैबते कुबरा के लिए एक मुक़द्दमा था। इमाम अ़लैहिस्सलाम ने शीओं के अज़हान को आमादा किया कि ग़ैबत के ज़माने में किस तरह इमाम से राबेता रखा जा सकता है और मसाएल को हल किया जा सकता है।

बाब २२ : मुद्दइयाने नेयाबत का तज़केरा

बअ़्ज़ ऐसे अफ़राद गुज़रे हैं जिन्होंने ग़ैबते सुग़रा में ख़ुद को नाएबे इमाम बताया है। जिसने सब से झूटी नेयाबत का दअ़्वा किया वोह अबू मोहम्मद हसन शरीई था। इसी तरह मोहम्मद बिन नुज़ैर ग़ैरी, अहमद बिन हिलाल करख़ी,मोहम्मद बिन अ़ली बेलाल, हुसैन बिन मन्सूर हल्लाज, मोहम्मद बिन अ़ली शलमग़ानी और अबू बक्र बग़दादी जो अबू दल्फ़ मजनून भी कहलाता था ने नेयाबत के दअ़्वे किये थे। ख़ुदा ने उन सब को रुसवा और ज़लील किया।

५२वीं जिल्द में कुल दस बाब हैं। जैसा कि हम ने ५१वीं जिल्द के तआ़रुफ़ में लिखा कि पाँच बाब मुक़द्देमाती अबवाब हैं और उसके बअ़्द के अबवाब अस्ल बाब हैं और वोह जिल्द २२ अबवाब पर मुश्तमिल है लेकिन पाँच बाब को अ़लाहेदा करने के बाद सत्रह बाब होते हैं लेहाज़ा ५२वीं जिल्द में बाब का शुमारा १८वीं से शुरू होता है इसलिए हम उसी तरतीब से बयान कर रहे हैं। यअ़्नी ५१वीं और ५२वीं मिला कर कुल २७ बाब होते हैं।

बाब १८

(यअ़्नी तरतीब के लेहाज़ से बाब २३) उनके बारे में

जिन्होंने इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम का दीदार किया है सिर्फ़ एक वाक़ेआ नक़्ल करते हैं।

अली बिन इब्राहीम फ़ेदकी ने हेकायत की है कि औदी ने उनसे नक़्ल किया है कि मैं ख़ानए कअ्बा का तवाफ़ कर रहा था। छः तवाफ़ मुकम्मल कर चुका था और सातवाँ तवाफ़ करना चाहता था कि मेरी नज़र कुछ लोगों पर पड़ी जो ख़ानए कअ्बा के दाएं तरफ़ बैठे थे और (दरवाज़ा के सामने रुख़ करके खड़े हों तो बाएं तरफ़ हजरे असवद है और दाएं तरफ़ हिज्रे इस्माईल) एक ख़ूबसूरत और मोअत्तर जवान उनके क़रीब आया और गुफ़्तुगू शुरू की। मैं भी आगे बढ़ा और सोचा कि उससे बात करूं लेकिन मजमअ् ने मुझे रोक दिया। मैंने एक शख़्स से पूछा येह कौन है? कहा येह फ़रज़न्दे पैगंबर हैं हर साल एक दिन ख़ास लोगों से मुलाक़ात करते हैं और उनसे बात चीत करते हैं। मैंने उनकी तरफ़ रुख़ किया और कहा मैं आप की ख़िदमत में आया हूँ मेरी रहनुमाई फ़रमाइये ख़ुदा आप का रहनुमा हो। उन्होंने एक मुठ्ठी संगरेज़े उठा कर मेरे हाथ में दे दिया। मैंने कहा संगरेज़ा! फिर मैंने अपने हाथों को खोला तो देखा कि मेरी मुट्ठी सोने के सिक्कों से भरी थी! जब मैं वहाँ से हटा तो देखा वही हमारे आक़ा मेरे पास आए और फ़रमायाः हक़ीक़त की निशानी और आसारे हक़ तुम्हारे लिए आश्कार हो गए और तुम्हारे दिल की ना बीनाई बरतरफ़ हो गई, क्या मुझे पहचानते हो? मैंने कहा नहीं ख़ुदा की क़सम।

फ़रमायाः मैं वही महदी हूँ मैं क़ाएम हूँ ज़मीन को अद्ल से भर दूँगा जैसा कि वोह ज़ुल्म–ओ-जौर से भरी होगी ज़मीन हुज्जते ख़ुदा से ख़ाली न रहेगी....

तज़क्कुर

बेशुमार वाक़ेआत नक़्ल किये हैं जिन में इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम ने मक्का, मदीना, मेना, अरफ़ात, सामर्रा, कुम, करबला, नजफ़, और दुनिया के मुख़्तलिफ़ इलाक़ों के लोगों से मुलाक़ात फ़रमाई और उनकी हेदायत की।

बाब १९ (पिछली तरतीब के लेहाज़ से २४वाँ बाब)

सअ्द बिन अब्दुल्लाह अश्अरी का इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात करना और उन हज़रत अलैहिस्सलाम से बहुत से सवालों के जवाब हासिल करना। सअ्द बिन अब्दुल्लाह कुम्मी को किताबों के जम्अ करने उसके मुतालेआ और फिर उसकी मदद से शीआ मज़हब के हक़ाएक़ को बयान करने का बहुत शौक़ था लेहाज़ा बअ्ज़ मौक़ा अह्ले तसन्नुन से मुनाज़रा भी होता था। इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम ने आप की बड़ी मदद फ़रमाई और इस तरह सुन्नियों को नेदामत का सामना करना पड़ा।

बाब २० (पिछलीतरतीबसे२५वाँबाब)

इल्लते ग़ैबते इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम और लोगों को ज़मानए ग़ैबत में उन हज़रत से फ़ाएदा उठाना अल-मुन्तज़र के मुख़्तलिफ़ शुमारों में इस बाब से बहुत से मज़ामीन लिखे जा चुके हैं।

बाब २१: (पिछली तरतीब से २६वाँ बाब)

ग़ैबत के ज़माने में शीओं का इम्तेहान और उस इम्तेहान के ज़रीए से ईमान का पुख़्ता होना। इस बाब में येह बात भी नक़्ल हुई है कि हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम के ज़हूर का वक़्त कोई नहीं जानता लेहाज़ा जो ज़हूर का वक़्त बताए वोह झूटा है।

बाब २२ : (पिछली तरतीब से २७वाँ बाब)

फ़ज़ीलते इन्तेज़ार और शीओं की मद्ह-ओ-तअ्रीफ़ ज़मानए ग़ैबत में शीओं की ज़िम्मेदारियाँ इस बाब में ७७ रवायतें नक़्ल हुई हैं मशहूर रवायत जो आज ज़बाँ ज़दे आम है इसी बाब में है, पैग़ंबर अकरम ने फ़रमायाः मेरी उम्मत का सब से अफ़ज़ल अमल इन्तेज़ारे फ़रज है।

बाब २३: (या २८वाँ बाब)

इस बाब में उनका तज़केरा है जिन्होंने ग़ैबते कुबरा में

इमाम महदी अलैहिस्सलाम को देखने का दअ्वा किया है और येह कि हज़रत अलैहिस्सलाम लोगों के दरमियान में आते हैं और लोगों को देखते हैं लेकिन लोग उनको नहीं देख पाते, आप की मशहूर तौक़ीअ् जो आप ने अपने आख़री नाएब अली बिन मोहम्मद सैमुरी को कि जिस में आप ने ग़ैबते सुग़रा का ख़ातमा और ग़ैबते कुबरा के आगाज़ की ख़बर दी है, मौजूद है।

इमाम रज़ा अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

चूँकि हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने आबे हयात पिया है सूर के फूँके जाने तक ज़िंदा रहेंगे। वोह हमारे पास आते हैं सलाम करते हैं हम उनकी आवाज़ को सुनते हैं लेकिन ख़ुद उन को नहीं देखते। जहाँ भी उनका नाम लेते हैं वोह हाज़िर हो जाते हैं और तुम में से जो भी उनका नाम लेता है उसे सलाम करते हैं। ख़िज़्र अलैहिस्सलाम हर साल हज के लिए आते हैं और हज के तमाम अअ्माल अंजाम देते हैं और रोज़े अरफ़ा क़याम करते हैं और मोमेनीन की दुआओं के क़बूल होने के लिए आमीन कहते हैं बहुत जल्द ख़ुदा वंद हमारे क़ाएम की तूलानी ग़ैबत में उनकी वहशत को, उन (ख़िज़्र) से मानूस कर देने से दूर कर देगा और उनकी तन्हाई को रेफ़ाक़त में बदल देगा। (इसी लिए कहते हैं हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम के अनीसे ग़ैबत है)

बाब २४ : (या २९ वाँ बाब)

इस बाब में अल्लामा मजलिसी ने हरमे अमीरुल मोमेनीन अलैहिस्सलाम में मुक़द्दस अर्दबेली की मुलाक़ात नक़्ल की है। फिर मीर इसहाक़ अस्तराबादी मशहूर ब तैयुल अर्ज़ की मुलाक़ात, मीरज़ा मोहम्मद अस्तराबादी का वाक़ेआ और मोहम्मद बिन ईसा बहरैनी का वाक़ेआ जो अनार के वाक़ेए से मशहूर है, नक़्ल किया है।

बाब २५: (या ३० वाँ बाब)

इस बाब में अलामाते ज़हूर जैसे ख़ुरूजे सुफ़यानी और ख़ुरूजे दज्जाल और दूसरी बहुत सी अलामतों का तज़केरा है। येह बाब काफ़ी दिलचस्प है क्यूंकि अलामतों की बह्स में शक-ओ-शुबहात और एअ्तेराज़ात और मुख़्तलिफ़ नज़रियात की बौछार है। अल्लामा मजलिसी ने बहुत से शुबहात के जवाब दिये हैं। अलामतों के हत्मी होने, न होने का तज़केरा है, ज़हूर से पहले और ज़हूर के बअ्द के हालात पर रोशनी डाली गई है।

बाब २६ (या ३१ वाँ बाब)

इस बाब में ख़ास तौर से उस दिन का तज़केरा है जिस दिन आप का ज़हूर होगा और उस दिन क्या क्या चीज़ें वाक़ेअ् होंगी मसलन इमाम सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि हम अह्लेबैत में से क़ाएम का ज़हूर जुम्आ के दिन होगा। या बकरैन अअ्युन ने नक़्ल किया है कि इमाम सादिक़ अलैहिस्सलाम ने हजरे अस्वद और उस रुक्न के बारे में कि जहाँ हजरे अस्वद नस्ब किया गया है वज़ाहत फ़रमाई और फ़रमाया: इस रुक्न से एक परिन्दा क़ाएम पर उतरेगा और वोह परिन्दा सब से पहले उनकी बैअत करेगा ख़ुदा की क़सम वोह परिन्दा जिब्रईल है और येह वही रुक्न है जिस पर क़ाएम तकिया करेगा और वोह क़ाएम के वजूद पर हुज्जत-ओ-दलील है, और रुक्न उन लोगों के लिए शाहिद भी होगा जो लोग उस जगह पर उसकी बैअत करेंगे .... हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का नुज़ूल होगा उस दिन। हज़रत अब्दुल अज़ीम, जिन का रौज़ा मशहद में है, ने इमाम मोहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम से रवायत की है कि ३१३ नफ़र उनके गिर्द जम्अ हो जाएंगे येह मुख़्लेसीन होंगे। फिर हज़रत ज़हूर फ़रमाएंगे और जब अह्द-ओ-मीसाक़ मुकम्मल हो जाएगा यअ्नी उनकी तअ्दाद बढ़ कर दस हज़ार हो जाएगी तो ख़ुदा के हुक्म से क़याम करेंगे और इस क़द्र दुश्मनों को क़त्ल करेंगे कि ख़ुदा उनसे राज़ी हो जाएगा हज़रत अब्दुल अज़ीम ने दरियाफ़्त किया: मौला कैसे मालूम होगा कि ख़ुदा राज़ी हो गया? फ़रमाया ख़ुदा अपनी रहमत को उनके दिल पर इल्क़ा करेगा।

बाब २७ (या ३२ वाँ बाब)

इसी बाब में आप की सीरत व अख़्लाक़ और असहाब

बाक़ी सफ़हा न. ३१ पर

अस्रे ग़ैबत और अहम्मीयते तलबे इल्म

मुक़द्दमा

इन्शाअल्लाह हम इस मज़मून के उनवाने बाला के तहत मुख़्तलिफ़ ज़ावियों पर ताएराना नज़र डालेंगे।

अस्रे हाज़िर

मौजूदा दौर इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम की ग़ैबत का दौर है जो दूसरे ज़माने के अदवार से मुख़्तलिफ़ है। क्यूंकि येह दौर इंसान की बलंद परवाज़ी का हैरत अंगेज़ दौर है।

पिछले चार क़र्नों में इन्सान ने तरक़्क़ी के जिन मराहिल को तै किया है उसकी नज़ीर इन्सानी तारीख़ में नहीं मिलती।

येह तरक़्क़ी ज़िंदगी के किसी मख़्सूस शोअ्बे तक महदूद नहीं है इन्सानी ज़िंदगी के तमाम पहलूओं को मुकम्मल तौर पर अहाता किये हुए हैं। इस दौर को मुफ़क्किरों ने इल्म और साइंस का दौर कहा है।

साइंस के कमालात ने इन्सानी ज़िंदगी को आराम और आसाइश से भर दिया है।

क़ुरआन ने भी आख़री दौर के इल्मी इर्तेक़ा और पैग़म्बरे इस्लाम ने भी आख़री ज़माने के इन्सान को माद्दी तरक़्क़ियात का तज़केरा किया है। मअ्सूमीन ने भी इस दौर के हालात को अपनी अहादीस में बयान की है।

लेकिन साइंस ने जहाँ एक तरफ़ राहत के बेशुमार वसाएल फ़राहम किए हैं वहीं ऐसे गुनाहों को भी जनम दिया है जिस का तसव्वुर माज़ी में नहीं हो सकता था। जिस गुनाह को अंजाम देने के लिए माज़ी में मेहनत-ओ-मशक़्क़त की ज़रूरत थी इस दौर में एक कमप्यूटर के क्लिक के ज़रीए मुमकिन है। वोह टेलीवीज़न हो या इन्टरनेट जो मअ्लूमात बढ़ाने के साथ साथ ज़ेहनों को आलूदा करके हज़ारों जानें ख़तरे में डाल सकते हैं। ज़ुल्म-ओ-इस्तेबदाद और बे हयाई ने आज़ादिए फ़िक्र और इन्सानी हुक़ूक़ की बक़ा का जामा पहन लिया है।

अख़्लाक़ियात और इन्सानियात ने अपना एअ्तेबार खो दिया है और दीनी इदारों को शर्म-ओ-हया और दीन से तमस्सुक को शिद्दत पसंदी का नाम दिया जा रहा है।

अह्ले फ़िस्क़-ओ-फ़ुजूर के ख़ुद साख़्ता चलन पर वाह वाह हो रही है और दौलतमंदों को सराहा और नमूनए अमल बनाया जा रहा है। जिस की पेशन गोई अमीरुल मोमेनीन अलैहिस्सलाम ने फ़रमाई थी वोह आख़री दौर आ गया है, आप फ़रमाते हैं:

क़सम है उस ख़ुदा की जिसके क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है: तुम अपनी पसंदीदा चीज़ (ज़हूरे क़ाएम) को नहीं पाओगे यहाँ तक कि आँख में सुर्मा के बराबर मोमेनीन रह जाएंगे या दाल में नमक के बराबर। उसकी मिसाल येह है कि इन्सान गेहूँ का दाना पाक-ओ-पाकीज़ा करके ज़ख़ीरा करता है। कुछ दिनों के बाद उस में घुन लग जाता है। फिर उसको छलनी से छानता है पाकीज़ा करता है और अच्छे दाने को अलग करता है। और येह काम कुछ दिनों के बाद फिर करता है। और येह काम बार बार करता है यहाँ तक कि अच्छा दाना बहुत मुख़्तसर तअ्दाद में बचता है। इमाम फ़रमाते हैं तुम्हें इसी तरह छाना जाएगा। यहाँ तक कि सिवाए कुछ लोगों के कोई ईमान पर बाक़ी नहीं रहेगा जो ख़ुराफ़ात से महफ़ूज़ रहेंगे।

(बेहारुल अनवार, जिल्द ५२, सफ़हा ११५)

मौजूदा दौर ने हमारी ज़िंदगी को पुर आसाइश तो ज़रूर बनाया है लेकिन मअ्नवीयत और रूहानियत का बुरा हाल है। क्या इस मसअले का कोई हल है?

अहम्मीयते इल्म

किसी भी शै को इदराक करने के लिए इल्म की ज़रूरत बुनियादी तौर पर है। येह हक़ीक़त अज़हर मिनश्शम्स है।

किसी शै के मुतअ्ल्लिक़ तजरेबा हासिल करने के लिए उसका इल्म होना लाज़िम है।

येह बात वाज़ेह है कि मुसलमान होने के लिए इस्लाम की मअ्लूमात लाज़मा है। ईमान के लिए अक़ाएद से आश्ना होना ज़रूरी और लाज़मी है। रसूले अकरम

सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही इर्शाद फ़रमाते हैं:

हर मुसलमान पर इल्म हासिल करना वाजिब है। जान लो अल्लाह तालिब इल्म को दोस्त रखता है।

(काफ़ी, जिल्द १, सफ़हा ३५, हदीस १)

मज़कूरा बाला हदीस से येह बात तो तै है कि इल्म हासिल करना हर मुसलमान मर्द और औ़रत पर वाजिब है। ग़ौर तलब नुक्ता येह है कि वही इल्म क़द्र-ओ-मंज़ेलत का बाइस हो सकता है जो अल्लाह और अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम की मोहब्बत का मूजिब है। आइये हम ऐसे शख़्स पर नज़र डालें जो हुसूले इल्म से ग़ाफ़िल है। इस सिलसिले में एक हदीस जो मअ्सूम से मन्कूल है क़ारेईन की ख़िदमत में पेश है।

रावी कहता है: मैंने अबू अ़ब्दिल्लाह अ़लैहिस्सलाम से येह नसीहत सुनी:

तुम्हारे लिए येह ज़रूरी है कि दीन को गहराई से समझो, उन बद्दुओं की तरह न बनो जो दीन के मुतअ्ल्लिक़ गहराई और गीराई नहीं रखते। क़यामत के दिन अल्लाह न उन पर नज़र डालेगा न उनके अअ्माल पाकीज़ा करेगा।

(काफ़ी जिल्द १, सफ़हा ३०, हदीस १)

इल्मे दीन इन्सान को बेहिश्त से क़रीब करता है और जेहालत और ला इल्मी इन्सान को अल्लाह की रह़मत से दूर करती है। इल्म वोह नूर है जो इन्सानी ज़ेह्न और फ़िक्र को उजागर करता है और उसमें नुमू पैदा करता है। इमाम मूसा काज़िम अ़लैहिस्सलाम एक तवील हदीस में हेशाम को नसीह़त करते हैं:

अल्लाह के अहकाम को ज़्यादा मअ्लूमात रखने वालों की अ़क़्लें क़वी होती हैं और जिन की अ़क़्लें क़वी होती हैं वोह दुनिया और आख़ेरत में बलंद मर्तबा के हामिल होते हैं।

(काफ़ी जिल्द १, सफ़हा १३, हदीस १२)

एक मिसाल के ज़रीए इल्म की अहम्मीयत और ला इल्मी के शर को वाज़ेह करते हैं। इमाम जअ़्फ़र सादिक़ अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

अज्र-ओ-सवाब अ़क़्ल पर मौक़ूफ़ है। बनी इस्राईल का एक शख़्स एक जज़ीरा में मशग़ूले इबादत था जो सर सब्ज़-ओ-शादाब था। उस पर नहरें जारी थीं। एक फ़रिश्ते का उस आ़बिद के पास से गुज़र हुआ। उसने अल्लाह से उस आ़बिद के अज्र-ओ-सवाब के मुतअ्ल्लिक़ दरियाफ़्त किया। जब अल्लाह ने फ़रिश्ते को उस आ़बिद के अज्र से आश्ना किया तो उसकी इबादत की बनिस्बत येह अज्र बहुत मुख़्तसर नज़र आया।

अल्लाह ने उस फ़रिश्ते को आ़बिद की सोहबत इख़्तेयार करने का हुक्म दिया। वोह फ़रिश्ता इन्सानी शक्ल में ज़ाहिर हुआ। आ़बिद के दरियाफ़्त करने पर उसने जवाब दिया मैंने तुम्हारी इबादत और रूह़ानियत के बारे में सुना है और मेरी येह ख़ाहिश है कि मैं भी तुम्हारे साथ इबादते ख़ुदा करूँ। उस फ़रिश्ते ने आ़बिद के साथ एक दिन गुज़ारने के बअ्द कहा:

तुम्हारी येह सर सब्ज़ वादी पर तुम्हारी इबादत की जगह बहुत ही ख़ूबसूरत और दीदा ज़ेब है और बहुत मुनासिब है कि इसे इबादत ही के लिए इस्तेअ्माल होना चाहिए। उस पर आ़बिद ने कहा। तुम ने ठीक कहा लेकिन इस जगह में एक कमी है। दरियाफ़्त करने पर उस ने जवाब दिया कि हमारे रब के पास कोई जानवर नहीं है। काश उसके पास एक गधा होता ताकि वोह येह घास खा लेता। फ़रिश्ते ने दरियाफ़्त किया कहा तुम्हारे रब के पास गधा नहीं है। जवाब मिला: अगर होता तो येह घास इस तरह ज़ाएअ् न होती। अल्लाह ने फ़रिश्ते पर वह़ी की हम हर शख़्स को उसकी अ़क़्ल के मुताबिक़ अज्र देते हैं।

(काफ़ी, जिल्द १, सफ़हा ११, हदीस ८)

लेहाज़ा हम पर लाज़िम है कि इल्म हासिल करें ताकि साहेबे अ़क़्ल बनें।

इमाम मोहम्मद बाक़िर अ़लैहिस्सलाम की येह हदीस अक्सर हमारी नज़रों से गुज़रती है।

ऐसा आ़लिम जो अपने इल्म से इस्तेफ़ादा करे सत्तर हज़ार आ़बिदों से बेहतर है।

(काफ़ी जिल्द १, सफ़हा ३३, हदीस? ८)

हम अपनी मुख़्तसर सी बह्स के बाद इस नतीजे पर

पहुंचे हैं कि कोई सरचश्मए इल्म है जिस की तरफ़ रुजूअ् करने से हमें इल्म व यक़ीन की मंज़िलें दिखाई पड़ने लगती हैं। और वही हमारे लिए नजात दहिन्दा है। चुनाँचे इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने समला इब्ने कहील और हकम इब्ने अ़तीबा से इर्शाद फ़रमाया:

मशरिक़ और मग़रिब में तुम कहीं जाओ हमारे अ़लावा तुम्हें कहीं हक़ीक़ी इल्म हासिल नहीं होगा। (बस येह साबित हुआ कि हक़ीक़ी सर चश्मए इल्म मअ्सूमीन अ़लैहिमुस्सलाम है)।

(काफ़ी, जिल्द १, सफ़हा ३९९, हदीस ३)

हम इस जगह क़ुरआन जो कलामे इलाही है और तमाम ख़ुश्क व तर इस में सिमटे हुए हैं और अहादीस जो अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम से मरवी हैं क़ारेईन के लिए पेश करने की सआ़दत हासिल करेंगे।

एक मआ़शरती पहलू

एक मोमिन की दो ज़िम्मेदारियाँ हैं। एक येह कि तरक़्क़ी की राह पर गामज़न रहे और दूसरे येह कि वोह दूसरों की उसके उमूर में मदद करे चाहे वोह उसके अहल-ओ-अ़याल हों या दोस्त या मआ़शेरा।

इमाम जअ़्फ़र सादिक़ अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

अल्लाह तआ़ला की इबादत मोमिन का हक़ अदा करने से बेहतर किसी चीज़ से नहीं हो सकती है।

(काफ़ी, जिल्द १, सफ़हा १७०, हदीस ४)

लेहाज़ा येह ज़रूरी है कि इस मसअले का हल इन्फ़ेरादी और इज्तेमाई दोनों सतहों पर हो।

इल्म कैसे ईमान को महफ़ूज़ रख सकता है?

गुज़श्ता सफ़हात में इल्म की फ़ज़ीलत बयान हो चुकी है। अब सवाल येह उठता है कि क्या इल्म में वोह ताक़त पाई जाती है जो हमारे नफ़्स में उठती हुई ख़ाहिशात की लहरों को ख़ामोश कर सके। क्या हम इज्तेमाई और इन्फ़ेरादी तौर पर अ़स्रे ग़ैबत में सेराते मुस्तक़ीम पर साबित क़दम रह सकते हैं।

इस सवाल का जवाब है हाँ। लेकिन हर शै की तरह इस अम्र में भी अल्लाह और अह्ले बैत की मदद दरकार है।

पहला क़दम:

चूँकि इन्सान एक समाजी जानवर है लेकिन उसकी अशरफ़ियत का दार-ओ-मदार इल्म है जिसे हासिल करने के लिए ख़ुदावंद मुतआ़ल ने हमारे लिए क़ुरआने करीम और मअ्सूम रहबरों का ज़रीआ़ क़रार दिया है इस लेहाज़ से हमारी इन्फ़ेरादी और इज्तेमाई दोनों तरह से बहुत सी ज़िम्मेदारियां हैं जिन्हें हम चंद अहादीस के ज़रीए बयान करेंगे जो ग़ौर तलब हैं। इन्सानी ज़िंदगी दो कैफ़ियात से ख़ाली नहीं एक वोह कैफ़ियत जो दौरे मसाएब में पैदा होती है और दूसरी वोह कैफ़ियत जो ख़ुशहाली और सेहत मंदी के दौर में पाई जाती है। साहेबे अ़क़्ल-ओ-फ़ह्म का मसाएब का दौर में क्या रवैया रहना चाहिए।

इमाम जअ़्फ़र सादिक़ अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

आले दाऊद की हिकमत में से एक हिकमत येह है कि आ़क़िल अपने ज़माने के हालात से आगाह हो अपने आप से आगाह हो और अपनी ज़बान को महफ़ूज़ रखे।

(काफ़ी, जिल्द २, सफ़हा ११६, हदीस २०)

इमामे जअ़्फ़र सादिक़ अ़लैहिस्सलाम का येह जुम्ला कितना वाज़ेह है:

साहेबे अ़क़्ल-ओ-फ़ह्म दीनी और दुन्यवी तरबियत हासिल करने के बअ़्द अपने हालात का जाएज़ा लेगा और ख़ामोशी से आगे बढ़ेगा।

एक तअ़्लीम याफ़्ता शख़्स के लिए मआ़शेरे के मसाएल को समझना और मुनासिब हल तलाश करना दुश्वार नहीं है।

चूँकि हम ग़ैबत के ज़माने में ज़िंदगी बसर कर रहे हैं। लेहाज़ा अब हमें पहचानना होगा, मअ्रेफ़त हासिल करनी होगी उस ज़ात की जो हमारी ज़िम्मेदारियों से हमें आगाह करता है।

लेहाज़ा अ़स्रे ग़ैबत में अहम तरीन ज़िम्मेदारी मअ्रेफ़त है।

मिकयालुल मकारिम के १७० से १७५ सफ़हात का यहाँ पर ख़ुलासा पेश कर देना काफ़ी है।

इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

ऐ फ़ुज़ैल अपने इमाम को पहचानो। अगर तुम अपने इमाम की सहीह मअ्रेफ़त रखते हो तो उस अम्र की तअ्जील तुम्हें कोई नुक़्सान न पहुंचाएगी क्यूंकि जो शख़्स अपने इमाम की मअ्रेफ़त रखते हुए फ़ौत हो जाए उसकी मिसाल ऐसी है जैसे वोह इमाम अलैहिस्सलाम के ख़ैमे में मौजूद हो या उनके अलम के नीचे बैठा हो।

(काफ़ी, जिल्द १, सफ़हा ३७१)

रावी कहता है कि फिर इमाम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

येह ऐसा है जैसे वोह रसूलुल्लाह के साथ दरजए शहादत पर फ़ाएज़ हुआ हो।

(काफ़ी, जिल्द १, सफ़हा ३७१)

इसी किताब में बसनद मोअ्तबर फ़ुज़ैल इब्ने यस्र से रवायत है कि मैंने इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से सुना।

जो शख़्स इस हालत में मर जाए कि उसका कोई इमाम न हो वोह जाहेलियत की मौत मरेगा और जो इमाम की मअ्रेफ़त के साथ मर जाए उसको उस अम्र (ज़हूर) की तअ्जील व ताख़ीर का कोई नुक़्सान नहीं पहुंचेगा। और जो इमामे वक़्त की मअ्रेफ़त के साथ मर जाए ऐसा है जैसे वोह इमाम के ख़ैमे में मौजूद हो।

(काफ़ी, जिल्द १, सफ़हा ३७१)

तफ़सीरे बुरहान में मुआविया इब्ने वहब इमाम जअ्फ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से रवायत नक़्ल करते हैं कि आप (स.अ.) ने फ़रमाया:

इन्सान का सब से बेहतरीन और अहम फ़रीज़ा येह है कि वोह अल्लाह की मअ्रेफ़त हासिल करे और उसकी उबूदियत का एक़रार करे..... और उसके बअ्द रसूले ख़ुदा की मअ्रेफ़त और उनकी नबूवत की गवाही दे और उसके बअ्द इमामे वक़्त की मअ्रेफ़त के बअ्द हर हालत में उसकी इताअत करे।

(तफ़सीरे बुरहान, जिल्द २, सफ़हा ३४, हदीस ३)

लेहाज़ा दौरे ग़ैबत में मअ्रेफ़त को हर इल्म पर फ़ौक़ियत होना चाहिए। येह हक़ीक़ी इल्म है इसकी तअ्लीम और तअल्लुम दोनों लाज़िम-ओ-ज़रूरी है।

मज़कूरा हदीस में मअ्रेफ़त की अहम्मीयत बयान होती है।

इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम अपने फ़रज़ंदों को नसीहत करते हैं:

बेशक मअ्रेफ़त, हदीस को दर्क करना और समझना है और हदीस का दर्क करना मोमिन को ईमान के बलंद तरीन दरजात तक पहुंचाता है।

आइये एक मिसाल के ज़रीए इस को वाज़ेह करें।

बअ्ज़ औक़ात किसी डॉक्टर को सिगरेट पीते या शराब ख़ोरी करते हुए देखते हैं। वोह जानता है कि दोनों चीज़ें नुक्सान देह हैं। लेकिन अगर यही डॉक्टर ख़ुदा नख़ास्ता कैंसर की बीमारी में मुब्तेला हो जाए तो क्या वोह फिर भी सिगरेट पिएगा, नहीं।

इल्मे यक़ीन

इल्म वोह नूर है जिस का मस्कन इन्सान का क़ल्ब है।

(क़ल्ब का लफ़्ज़ तशरीह तलब है इन्शाअल्लाह आइन्दा) यअ्नी वोह इल्म जो अइम्मए मअ्सूमीन अलैहिमुस्सलाम और पाकीज़ा नुफ़ूस अफ़राद के ज़रीए दस्तयाब हुआ है।

इल्म और यक़ीन की एक अलग बहस है इस ज़िम्न में इतना लिख देना काफ़ी होगा कि मुरसले अअ्ज़म सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही से ले कर तमाम इमामाने मअ्सूम ने दौरे ग़ैबत में इल्म हासिल करने और यक़ीन से क़ल्ब को मुनव्वर रखने के लिए बहुत ताकीद की है चुनाँचे मुरसले अअ्ज़म सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही की एक दुआ है:

ऐ मेरे परवरदिगार मुझे मेरे भाइयों से मिला दे।

असहाब ने दरियाफ़्त किया। क्या हम आप के भाई नहीं है?

आप सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही ने फ़रमाया:

नहीं तुम मेरे असहाब हो। मेरे भाई आख़िरुज़्ज़मान में वोह लोग हैं जो देखे बग़ैर मुझ पर ईमान लाएंगे .... फिर आप ने उनका मर्तबा बयान किया।

(बेहारुल अनवार, जिल्द, ५२, सफ़हा १२५)

आइए तजदीदे अहद करें कि इस ख़िदमते अज़ीम

को अंजाम देंगे और इमाम अलैहिस्सलाम के सामने सरे तस्लीम ख़म करें और येह अह्द करें कि उनका हत्तल इमकान देफ़ाअ् करेंगे। जिस तरह हम दुआए अह्द में पढ़ते हैं:

ऐ अल्लाह आज की सुब्ह और हर सुब्ह मैं, अपनी गर्दन पर उन की बैअत और उनकी नुसरत के वअ्दे को तजदीद करता हूँ। मैं हरगिज़ उस से न किनारा कश हूँगा न ही उससे दूरी इख़्तेयार करूंगा। आमीन-

---

सफ़हा न. २६ का बाक़ी

की तअ्दाद और उनकी ख़ुसूसियात व हालात का तज़केरा है। येह बाब ख़ासा दिलचस्प है। बहुत से एअ्तेराज़ात के जवाब हैं। येह बाब ५२वीं जिल्द का आख़री बाब है।

५३वीं जिल्द

नई इशाअत की येह ५३वीं जिल्द है। इस जिल्द में सिर्फ़ चार बाब हैं चार अबवाब की तफ़सील दर्ज ज़ैल हैं।

बाब २८ (या ३३वाँ बाब)

इस बाब में इमाम जअ्फ़र सादिक़ और इमाम मूसा काज़िम अलैहेमस्सलाम के मशहूर सहाबी जनाब मुफ़ज़्ज़ल बिन उमर कूफ़ी के ज़रीए इमाम ज़माना अलैहिस्सलाम के ज़हूर के वक़्त के हालात नक़्ल हुए हैं। मुफ़ज़्ज़ल बिन उमर ने इमाम सादिक़ अलैहिस्सलाम और इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम से सवालात किये हैं और उन हज़रत ने जवाब दिये हैं। मसलन दरियाफ़्त किया कि आया महदी मुन्तज़र के ज़हूर का वक़्त मुअय्यन है ताकि लोग येह जान लें कि कब ज़हूर होगा? या उनके ज़हूर के वक़्त हालात कैसे होंगे? क्या वक़्ते ज़हूर मुअय्यन नहीं हुआ है? आयत लेयुज़हिरहू अलद्दीने कुल्लेह ... की तावील क्या है? क्या उनका दीन इब्राहीम व मूसा व ईसा व मोहम्मद अलैहिमुस्सलाम का दीन होगा? क़ौमे मूसा को यहूदी कहते हैं? ईसाइयों को नसरानी कहते हैं? महदी किस ज़मीन से ज़हूर फ़रमाएंगे? ग़ैबत में उनका साथी कौन होगा? ग़रज़ येह कि इसी तरह के बहुत से सवालात के जवाब इमाम सादिक़ और इमाम मूसा काज़िम अलैहेमस्सलाम ने दिये हैं।

बाब २९ (या ३४वां बाब)

येह बाब रजअत के बारे में सफ़हा नंबर ३९ से १४५ तक यअ्नी १०१ सफ़हात पर मुश्तमिल येह बाब कुल १६२ हदीसों का मजमूआ है। अल्लामा मजलिसी (रह.) के बेहतरीन तबसेरे, वज़ाहतें और मुख़ालेफ़ीन के मुदल्लल जवाब इस बाब में नज़र आते हैं। रजअत की बह्स क़द्रे मुश्किल बह्स और हस्सास है। अह्ले सुन्नत रजअत पर अक़ीदा नहीं रखते इस लिए कि रजअत की बातें उन्हें अच्छी नहीं लगती हैं। इमाम बाक़िर अलैहिस्सलाम से रवायत नक़्ल की है कि रजअत की बातों को उनके सामने मत किया करो।

बाब ३० (या ३५ वां बाब)

इस बाब में ख़ुलफ़ाए महदी अलैहिस्सलाम और उनकी औलाद का तज़केरा और उन हज़रत अलैहिस्सलाम के बअ्द क्या हालात होंगे, तज़केरा है।

बाब ३१ (या ३६वां बाब)

येह क़दीम व जदीद दोनों जिल्दों का आख़री बाब है। २३ हदीसों पर मुश्तमिल है। इमामे ज़माना की जानिब से वारिद होने वाली तौक़ीआत नक़्ल हुई हैं। तौक़ीआत दर अस्ल वोह ख़ुतूत या तहरीरें हैं जिसे इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम ने ग़ैबते सुग़रा में अपने नाएबीने ख़ास के ज़रीए शीओं के मुख़्तलिफ़ मसाएल व मुश्किलात के जवाब दिये हैं। और ग़ैबते कुबरा में भी हमारे जय्यद उलमा ने आप से सवालात किये हैं या बअ्ज़ मौक़ा बग़ैर किसी सवाल के हज़रत ने ख़ुद ही इस्लाह के लिए ख़त भेजा है।

मज़मून के ख़ातमे पर बारगाहे ख़ुदावंदी में दुआगो हैं कि हज़रत अज्जलल्लाहो तआला का ज़हूर जल्द अज़ जल्द हो और हम उनके अअ्वान-ओ-अन्सार में शुमार किये जाएं।

ऐ रब्बे दो जहाँ हमें तौफ़ीक़ अता फ़रमा कि हम अपने उलमा की क़द्र-ओ-मंज़ेलत को समझें। दर्क करें और उनकी दी हुई इल्म की रोशनी में अपने आक़ा इमामे अस्र अलैहिस्सलाम की मअ्रेफ़त हासिल करें। आमीन

सफ़हा न. १ का बाक़ी

है कि सिर्फ़ और सिर्फ़ यही वोह इस्तेग़ासा है जिसके लिए मअ्बूद की तरफ़ से लब्बैक की सदाए दिलनवाज़ नग़्माहाए आसमानी बन कर फ़ितरत में उभरती है जो वजूदे ख़ाकी को कोह-ओ-दमन की सैर कराता है। क़दीम ज़माने की अक़वाम में अ़वाम ने इंसाफ़ और अ़दालत की गुहार मचाई है। अपने हुक़ूक़ की आवाज़ उठाई है और ताक़तवर तबक़े ने उस आवाज़ को दबाने की भरपूर कोशिश भी की है। क़दीम मज़ाहिब की किताबों में येह रिकार्ड मौजूद है कि उस तबक़े के अफ़राद जो अपनी दयानतदारी, नेकी और सदाक़त और सालेहीयत की बेना पर कमज़ोर कर दिये गए हैं उनके इल्म-ओ-यक़ीन ने किसी नजात दहिंदा के आने की ख़ुशख़बरी दी है।

आइये देखें उसके इन्तेज़ार का ज़िक्र जो मौऊ़द है और अ़दालते इलाहिया का मंसब दार है और जो सर चश्मए हयात है। जो मताए नजात है और जो रूहे काएनात है अक़वामे देरीना की किताबों में किस तरह हुआ है जिसका इज्माली जाएज़ा ही मुमकिन है इस लिए कि उस पर दानिशमंदों ने जितना काम किया उसका केनवास बहुत वसीअ्-ओ-बसीत है।

१. किताब वेद

येह किताब क़दीम ज़माने से एक आसमानी किताब तसव्वुर की जाती है। इस में तहरीर है दुनिया में जब ख़राबियाँ बढ़ जाएंगी तो आख़री ज़माने में एक बादशाह आएगा जो सारी मख़्लूक़ का पेशवा होगा उसका नाम मंसूर होगा। वोह सारी दुनिया पर क़ाबिज़ होगा और वोह अपना दीन लाएगा। मोमिन और काफ़िर को ख़ूब पहचानेगा। और वोह जो कुछ ख़ुदा से चाहेगा उसे दस्तियाब होगा। (मंसूर अल्क़ाबे महदी अ़लैहिस्सलाम में से एक है)।

२. किताब बासक

लोगों की दीन से दूरी ख़त्म हो जाएगी। वोह मलाएका, परियों और आदमियों का बादशाह होगा। वोह आसमानों और ज़मीन की ख़बर रखेगा। कोई शै उससे पोशीदा न होगी उससे बढ़ कर और कोई दूसरा न होगा।

३. उपानीशद

सफ़हा ७३७ येह साहब विष्णु का दसवाँ अवतार होगा सफ़ेद घोड़े पर सवार शमशीर जो दुमदार सितारे की तरह दमकती होगी उसके हाथ में होगी। वोह जब साहबे इक़्तेदार होगा तो अश्रारे आ़लम का ख़ात्मा कर देगा और ख़िल्क़त को फिर से हयाते नौ बख़्शेगा और पाकीज़ा लोगों की रजअ़त का बाइस होगा।

४. जैन की मुक़द्दस किताब में है (थूकड़ा के सक़रों के इशारे)

जब फ़साद, इन्हेतात, और तबाही पूरी दुनिया में फैल जाएगी एक इन्साने कामिल जिस का नाम (तीर तंगर) यानी ख़ुशख़बरी देने वाला होगा ज़ाहिर होगा। वोह तबाहकारी को नीस्त-ओ-नाबूद कर देगा और पाकीज़गी और सफ़ाइये किरदार को दुनिया पर क़ाएम कर देगा।

५. शाकमूनी

हिन्दू अ़क़ाएद की बेना पर पैग़ंबर, साहबे किताबे आसमानी थे। फ़रज़ंदे सय्यदे ख़लाएक़ जिसका नाम किशन (कृष्ण) है उसकी ज़ात पर बादशाही और हुकूमते दुनिया तमाम-ओ-कमाल पर मुन्तहा होगी। (किशन लुग़त हिन्दिया में बमअ्नी पैग़ंबर के है)

हम इस के बअ्द किताबे ज़बूर के चंद इक़्तेबासात पर वारिद होते हैं।

क़ारेईन मुलाहेज़ा फ़रमाएं।

१. मज़ामीरे दाऊद अ़लैहिस्सलाम जो आजकल पुरानी किताब तौरात का एक जुज़ है उस में ख़ुदावंद मुतआ़ल दाऊद अ़लैहिस्सलाम को इस तरह मुख़ातिब फ़रमाता है: (अ) शर पसंदों के सबब तशवीशनाक मत हो (मज़मूर ३७) (ब) इसलिए कि वोह घास फूस की तरह कट जाएंगे। (ज) और मिस्ल सब्ज़ घास के मुर्दा और ख़ुश्क हो जाएंगे। (द) ख़ुदा पर तवक्कल करो और नेकी करो (ह) ख़ुदा के क़ुर्ब में ख़ामोश रहो और उसका इन्तेज़ार करो।

ज़बूर में आगे चल कर इस तरह की इबारत है। अह्ले इल्म-ओ-हिल्म ज़मीन के वारिस होंगे। और नेहायत सलामती के साथ फ़रावानिये नेअ्मते इलाही से मुतलज़्ज़िज़

होंगे। (दूसरी तरफ़) शर पसंदों का गिरोह शमशीर बरहना लिये होंगे और कमान पर चिल्ले को चढ़ा कर तीर रखे हुए आगे बढ़ेंगे, फ़क़ीर और मिस्कीन को मारते हुए सच्चे और नेक लोगों को क़त्ल करेंगे। लेकिन (बअ्दे ज़हूर) उनकी शमशीर उन्हीं के दिलों में उतर जाएगी और उनकी कमानें टूट जाएंगी इसलिए कि शरपसंदों के बाज़ू टूट चुके होंगे।

बस ख़ुदावंद मुतआल सालेहीन की ताईद करता है कि ख़ुदा उस रोज़ को ख़ूब जानता है जब सालेहीन को इस ज़मीन का अबदलआबाद तक उसका वारिस क़रार देगा (क़ुरआने मजीद की आयए करीमा पर ग़ौर करने की ज़रूरत है)

लक़द कतब्ना फ़िज़्ज़बूरे मिम् बअ्दिज़् ज़िक्रे अन्नल अर्ज़ा यरिसोहा एबादेयस् सालेहून

(सूरए अंबिया, आयत १०५)

तौरात:

इस आयए करीमा के तहत आसमानी किताब तौरात की याद आवरी की गई है। जैसा कि सूरए अंबिया की आयत ४८ में बात वाज़ेह हो गई है।

इंजील:

इंजीले मता बंद १३, इंजीले मरक़स बंद १३३, इंजीले लूक़ा बंद ३५

हम इन बयानात के निचोड़ को चंद जुम्लों में तहरीर करेंगे जिस की हस्सासियत और अहम्मीयत ज़हूरे इमामे ज़मान अलैहिस्सलाम का तवीले इन्तेज़ार है।

१. कुछ मेरे नाम मसीह से दअ्वेदार होंगे और गुमराह करेंगे।
२. कुछ झूठे और क़ाज़िब ख़ुद को नबी कहेंगे और गुमराह करेंगे।
३. जो आख़िरुज़् ज़मान तक सब्र करेगा उसी को नजात मिलेगी।
४. एक इंसान का पेसर बर्क़ की तरह आसमाने मशरिक़ से ज़ाहिर होगा और मग़रिब तक दिखाई पड़ेगा।
५. और इंसान होगा जो बादलों पर सवार और बड़ा क़ूवत-ओ-जलाल वाला होगा और फ़रमान देहे फ़रिश्तगान होगा।

आसमान और ज़मीन मिट जाएंगे लेकिन मेरा क़ौल बाक़ी रहेगा।

ज़रतुश्त (आतश परस्त) उनकी किताब (जामासब नामा)

जामासब:

ज़रतुश्त से पैग़ंबरे इस्लाम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही और इमाम महदी अज्जलल्लाहो तआला और रजअत के बारे में यूँ बयान मिलता है।

अरब का पैग़ंबर ख़ातेमुन् नबीयीन होगा। मक्का में पैदा होगा। ऊँट पर सवार होगा। उसकी क़ौम शुतुर सवारों की होगी। बंदगाने ख़ुदा के साथ तनावुल फ़रमाएंगे। बंदगाने ख़ुदा के साथ रहेंगे और उसके जिस्म का साया न होगा। वोह जिस तरह सामने देखेगा उसी तरह अपने अक़ब को भी देखेगा उसका दीन तमाम दीनों में अशरफ़ होगा। और उसकी किताब दूसरी आसमानी किताबों को और पहलवी को बरतरफ़ कर देगा। आतश कदों को ख़ामोश कर देगा। पेश दादियाँ, कयानियान, सासाइयान और अशकानियान सब ख़त्म हो जाएंगे।

इस पैग़ंबर की दुख़्तर के फ़रज़ंदों में से एक फ़रज़ंद जिसका नाम शाहे ज़मान होगा वोह बादशाह होगा..... और उसकी हुकूमत के सामने दूसरी हुकूमतें ख़त्म हो जाएंगी उसके ज़माने में पाक बीनों और पयाम्बरों और सालेहीन की रजअत होगी। (इन्तेज़ार शर्त है)

क़ारेईने केराम सफ़रे इन्तेज़ारे इमाम महदी अलैहिस्सलाम दूर दराज़ माज़ी से जारी है। दुनिया जहाँ नेक बंदों के लिए जाए मसाएब है वहीं उम्मीदे सुब्हे ज़हूर की नवेद क़दीम ज़माने से गूंज रही है। हज़रत ईसा रूहुल्लाह के बाद तक़रीबन ६०० बरस की मुद्दत का फ़ासला है जब मुरसले अअ्ज़म सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही मबऊस ब रेसालत हुए। आप ख़ातमुल मुरसलीन सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही हैं। ख़ातमुल अंबिया अलैहिस्सलाम हैं आप पर दीन के कमाल-ओ-तमाम की मोह्र लगाई गई है शरीअत आप की सीरत और क़ुरआने करीम के मज़बूत सुतून पर इस तरह क़ाएम-ओ-दाएम हुई कि अब मुतज़लज़िल होने का सवाल ही पैदा नहीं होता। क़ुरआने करीम में इमाम मंसूर इमामे ज़मान अलैहिस्सलाम के

बाक़ी सफ़हा न. १९ पर

अलमुन्तज़र

सिलसिलए दुरूस

अ़ज़ीज़ गेरामी! सलाम-ओ-रहमत

ख़ुदावन्द करीम की एनायतों और हज़रत हुज्जत अ़लैहिस्सलाम की नवाज़िशों के ज़ेरे साया आप बख़ैर होंगे। ख़ुदावन्द आ़लम हज़रत हुज्जत के ज़हूर में तअ़्जील फ़र्माए और हम सबको हज़रत के ख़ादिमों में शुमार फ़र्माए। आमीन.

हज़रत हुज्जत अ़लैहिस्सलाम की बाबरकत ज़ात से मन्सूब रेसाला ''अलमुन्तज़र'' सबक़ नं. १ तक़रीबन सभी अलमुन्तज़र मेम्बरान को इरसाल किया था और किया जा रहा है जिसमें एक सवालनामा होता है जिसके जवाब भी उसी सबक़ में मौजूद होते हैं।

जिन हज़रात का पुर करदा सवालनामा हम तक पहुँचा हमने दूसरा सबक़ इरसाल कर दिया। लेकिन जिन हज़रात के जवाब मौसूल नहीं हुए (और अक्सरीयत ऐसे अफ़राद की है) उनकी ख़िदमत में दूसरा सबक़ इरसाल नहीं कर सके। अगर आप इस सिलसिलए दुरूस में वाक़ेअ़न दिलचस्पी रखते हैं तो हमें बस एक पोस्ट कार्ड से इत्तेला करें हम दूसरा सबक़ इरसाल करने की सआ़दत हासिल करेंगे। जवाब न मिलने पर येह माना जाएगा कि आप सिलसिलए दुरूस में दिलचस्पी नहीं रखते। अगर एक सबक़ मिलने के बाद आपको दूसरा सबक़ दो महीने के अन्दर मौसूल नहीं हुआ हो तब भी एक ख़त को ज़रीए हमें ज़रूर इत्तेला करें ताकि सिलसिले को जारी रखा जा सके।

येह सिलसिला १८ असबाक़ पर मुश्तमिल है और येह फ़िलहाल उर्दू, हिन्दी और अँग्रेज़ी में मौजूद है। इसके अ़लावा ख़ुसूसी शुमारे मुहर्रम और शअ़बान (शाबान) में इरसाल किए जाते हैं। येह फ़िलहाल उर्दू, हिन्दी और अँग्रेज़ी में मौजूद है। ख़ुसूसी शुमारा न मिलने पर भी एक ख़त के ज़रीए हमें मुत्तला करें या इस नम्बर (**९९८७७७७७५७**) पर **एस एम एस** करें।

अक्सर हमें ना मुकम्मल पते मौसूल होते हैं जिस पर हम रेसाला इरसाल नहीं करते। हर एक ख़त-ओ-किताबत में अपना रुक्नियत नम्बर (रिफ़रेन्स नम्बर) ज़रूर लिखें। बेहतर है कि अपना पता अँग्रेजी में लिखें। सिलसिलए दुरूस का कोई ख़ास और मोअ़य्यन ज़रे इश्तेराक या हदिया नहीं है। आप इस कारे ख़ैर में हस्बे तौफ़ीक़ जो भी रक़म इरसाल फ़र्माएँगे क़ुबूल करली जाएगी। अलबत्ता सिर्फ़ ड्राफ़्ट या मनी आर्डर ही की शक्ल में रवाना फ़र्माएँ। बिलख़ुसूस मनी आर्डर की स्लिप पर अपना नाम, पता और रुक्नियत नम्बर ज़रूर लिखें। आप इस सिलसिले में शरई रुक़ूम भी इरसाल कर सकते हैं।

आइए हम सब मिलकर हज़रत हुज्जत अ़लैहिस्सलाम के ज़हूर के लिए ज़मीन हमवार करें और उनकी ख़ुशनूदी के असबाब फ़राहम करें ताकि ख़ुदावन्द आ़लम हम सबको हज़रत हुज्जत अ़लैहिस्सलाम के ख़ादिमों में शुमार करे। आमीन.

वस्सलामो अ़लैकुम व रहमतुल्लाहे वबरकातुहू